LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

सद्भावना

राजभाषा पत्रिका
वर्ष 2025

भारतीय जीवन बीमा निगम, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री सलिल विश्वनाथ
कार्यकारी निदेशक (मा.सं.वि. एवं प्रशिक्षण)

प्रधान संपादक

सुश्री एस. गायत्री
सचिव (मा.सं.वि. एवं प्रशिक्षण)

संपादक

श्री त्रिलोकानन्द मिश्र
उप सचिव (राजभाषा)

सहयोग

श्री अनुज मिश्र
श्री परविंदर कुमार
सुश्री प्रज्ञा कुलकर्णी
सुश्री नीलम राशि लुगुन

निगम गीत

आओ प्यारे साथ हमारे
जन सेवा हित सांझ सकारे ।

सम्यक संचय और निवेशन
जन जन का ही हित संवर्धन
निगम नीति का उच्च लक्ष्य है
व्यक्ति और परिवारोत्थान ।

लोक हितैषी सेवा दीक्षा
जन मन प्रेरित सतत सुरक्षा
योगक्षेम ही परमध्येय है
निगम हमारा प्रिय संस्थान ।

उठो निगम के सच्चे सेवक
अभिकर्ता जन और प्रबंधक
बुला रहे है कार्य लोकहित
तुम पर निर्भर जन कल्याण ।

आओ प्यारे साथ हमारे
जन सेवा हित सांझ सकारे ।

भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

भारतीय जीवन बीमा निगम
केन्द्रीय कार्यालय की
राजभाषा पत्रिका वर्ष-2025

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, संपादक या भारतीय जीवन बीमा निगम का उससे सहमत होना जरुरी नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्रमांक		पृष्ठ क्रमांक
1	अनुक्रमणिका	3
2	सीईओ एवं एमडी का संदेश	4
3	प्रबंध निदेशक गणों का संदेश	5-7
4	कार्यकारी निदेशक का संदेश	8
5	प्रधान संपादक की कलम से	9
6	संपादकीय	10
7	सद्भावना: एक नाम अनेक अवतार	11-12
8	परिवर्तन के युग में हिन्दी की भूमिका	13-14
9	मानव बनाम कृत्रिम बुद्धिमत्ता - सोच की जंग	15
10	पायर	16
11	कभी सोचकर तो देखें	17-18
12	हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का अन्तर्सम्बन्ध	19-20
13	रु-ब-रु (कविता)	21
14	माँ की ममता / लुप्त हो गये वो रंग (कविता)	22
15	"माँ भारती, माँ शारदा का वरदान और मधुर गान है राजभाषा हिंदी"	23-25
16	मानव मन : अनंत संभावनाएं एवं प्रश्न - भारतीय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में	26
17	पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं का योगदान	27
18	मेरा अमेरिका दौरा	28-30
19	"एलआईसी का अभेद रक्षा सूत्र है "योगक्षेमं वहाम्यहम्" (कविता)	30
20	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में नौकरियों का महत्व	31-33
21	भारतीय बीमा उद्योग: चुनौतियों का सामना और नवाचार का अमृत	34-35
22	जीवन बीमा - जीवन का वचन (कविता)	36
23	"शहर बदला है, लेकिन रफ्तार नहीं..."	37
24	भारतीय जीवन बीमा निगम (कविता)	38
25	राजभाषा पुरस्कार वर्ष 2024	39
26	हिंदी दिवस -2024	40
27	संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा निरीक्षण	41-43

सीईओ एवं एमडी महोदय का संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि राजभाषा विभाग द्वारा इस वर्ष भी निगम की राजभाषा पत्रिका 'सद्भावना' का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका हमारी सांस्कृतिक चेतना, रचनात्मकता और हिन्दी के प्रति प्रतिबद्धता का सजीव प्रतिबिंब है।

हिन्दी न केवल हमारी पहचान और विरासत है, बल्कि ग्राहकों तक सेवाओं को सरलता और आत्मीयता से पहुँचाने का सशक्त माध्यम भी है। निगम के ग्राहकों को त्वरित सेवाएँ प्रदान करने के लिए हिन्दी का प्रयोग हमें और अधिक प्रभावी तथा ग्राहकोन्मुख बनाता है।

इस वर्ष की हमारी थीम "सशक्तिकरण, ऊर्जा संचार, निरंतर विस्तार" हमारे निगम की प्रगतिशील सोच और देशभर में सकारात्मक प्रभाव फैलाने के प्रयासों को दर्शाती है। आज जब संचार और तकनीक के क्षेत्र में लगातार विस्तार हो रहा है, हमें अपनी भाषा और प्रयासों को इन परिवर्तनों के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। डिजिटल और आधुनिक मंचों पर हिन्दी का बढ़ता उपयोग हमें यह विश्वास दिलाता है कि हिन्दी हमारी सफलता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि सभी सहकर्मी हिन्दी के प्रयोग को अपने कार्यों में न केवल शामिल करेंगे, बल्कि इसे और सरल, सुलभ एवं ग्राहकों के अनुकूल बनाने का प्रयास भी करेंगे। 'सद्भावना' का यह अंक हमारी प्रतिबद्धता को और मजबूत करेगा और पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा प्रेरणादायी साबित होगा।

हिन्दी दिवस एवं इस अंक के सफल प्रकाशन पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

आर. दुरैस्वामि
(सीईओ एवं एमडी)

प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे अत्यंत हर्ष है कि इस वर्ष भी केंद्रीय कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा हमारी प्रिय राजभाषा पत्रिका 'सद्भावना' का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका हमारी भाषा, संस्कृति और संगठनात्मक एकता का जीवंत प्रतीक है।

हिंदी हमारे लिए केवल संवैधानिक दायित्व नहीं, बल्कि ग्राहकों और सहकर्मियों से आत्मीय संवाद का सशक्त माध्यम है। यह हमारी कार्य संस्कृति में सहजता, सरलता और गति लाती है। आज जब दुनिया तेजी से डिजिटल हो रही है, तब हिंदी का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। ई-ऑफिस, ई-मेल, सोशल मीडिया तथा अन्य ऑनलाइन मंचों पर हिंदी का प्रयोग हमें तकनीक के साथ-साथ आत्मीय बनाए रखता है।

भारत सरकार द्वारा निर्धारित वार्षिक राजभाषा लक्ष्यों को प्राप्त करना प्रशासनिक कार्य के साथ ही हमारी भाषा के लिए प्रतिबद्धता और निगम में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति निष्ठा का प्रमाण है।

मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि हिंदी को केवल कार्य की भाषा न मानकर, अपनी सोच और संवाद की भाषा बनाएं। यही हमारी वास्तविक शक्ति है।

'सद्भावना' के इस अंक के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। मुझे विश्वास है कि यह अंक सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

शुभकामनाओं सहित,

सत पाल भानू
प्रबंध निदेशक

प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

प्रिय साथियों,

"सद्भावना" के इस अंक का प्रकाशन हम सबके लिए गर्व का विषय है। यह पत्रिका न केवल हमारी रचनात्मकता का मंच है, बल्कि हिंदी को डिजिटल और आधुनिक युग से जोड़ने की दिशा में एक प्रेरणादायी प्रयास भी है।

आज का समय तकनीक और नवाचार का है। मोबाइल एप्स, ऑनलाइन सेवाएँ और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर हिंदी का बढ़ता उपयोग इस बात का प्रमाण है कि हमारी भाषा आधुनिकता के साथ पूरी तरह सामंजस्य स्थापित कर रही है। इस दिशा में हमारा प्रयास हमें न केवल ग्राहकों के निकट लाता है, बल्कि सेवाओं को सरल व सुलभ भी बनाता है।

समय की इस सीढ़ी में जब हमारी निर्भरता अधिकतर मोबाइल और इलेक्ट्रोनिक उपकरणों में केन्द्रित हो गई है, हमारा विश्वास है कि सद्भावना पढ़ने और विचार करने का एक उत्तम माध्यम बनेगी।

हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम तकनीकी के हर नए माध्यम का उपयोग कर हिंदी को अपनाएँ। इससे न केवल भाषा की पहुँच बढ़ेगी, बल्कि हम ग्राहकों को उनकी अपेक्षाओं एवं सुविधा के अनुरूप उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने में सफल होंगे।

"सद्भावना" का यह अंक निश्चित ही हमें हिंदी के माध्यम से तकनीकी पहलुओं को समझने की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देगा।

शुभकामनाओं सहित,

दिनेश पंत
प्रबंध निदेशक

प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि केंद्रीय कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" का प्रकाशन किया जा रहा है। यह अंक निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। हिंदी केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं की भाषा भी है। यह परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सेतु का कार्य करती है।

आज की युवा पीढ़ी तकनीक और व्यवसाय दोनों में हिंदी को अपना रही है। सोशल मीडिया, ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर हिंदी का बढ़ता उपयोग इस बात का प्रमाण है कि आम जन के बीच हिन्दी बहुत ही लोकप्रिय हो गई है। हमें इस ऊर्जा और उत्साह के अनुरूप अपने काम काज में हिन्दी के उपयोग को बढ़ाना है जिससे हम अपने ग्राहकों को उनकी अपेक्षाओं के अनुकूल बेहतर सेवाएँ प्रदान कर सकें।

मुझे पूरा विश्वास है कि "सद्भावना" का यह अंक न केवल हमें प्रेरित करेगा, बल्कि हमें एक उज्ज्वल भविष्य की ओर भी अग्रसर करेगा।

शुभकामनाओं सहित,

रत्नाकर पटनायक
प्रबंध निदेशक

कार्यकारी निदेशक महोदय का संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि केंद्रीय कार्यालय द्वारा राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" वर्ष-2025 का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका केवल हिंदी लेखन का मंच नहीं, बल्कि हमारे संगठन की रचनात्मकता, संवेदनशीलता और साझा प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

हिंदी हमारी कार्यप्रणाली को न केवल सरल बनाती है, बल्कि हमारे ग्राहकों से आत्मीय संबंध स्थापित करने में भी मददगार है। जब ग्राहक अपनी भाषा में संवाद करता है, तो उसमें विश्वास और सहजता स्वतः आ जाती है। यही हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

आज का समय तकनीक और नवाचार का है। ऐसे में डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी का उपयोग हमें न केवल आधुनिक बनाता है, बल्कि व्यापक जन-समूह तक पहुँचने का अवसर भी देता है। ई-कार्यालय, मोबाइल एप्लिकेशन और सोशल मीडिया में हिंदी का प्रयोग हमारी कार्यकुशलता और पहुँच को और अधिक प्रभावशाली बना सकता है।

मैं आशा करता हूँ कि "सद्भावना" का यह अंक हमें प्रेरित करेगा। साथ ही राजभाषा हिंदी को अपनी कार्यशैली का अभिन्न अंग बनाकर हम अपने दायित्वों को अधिक गंभीरता से निभाएंगे।

शुभकामनाओं सहित,

सलिल विश्वनाथ
कार्यकारी निदेशक (मा.सं.वि. एवं प्रशिक्षण)

प्रधान संपादक की कलम से

केन्द्रीय कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" के माध्यम से आपसे संवाद करने में मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह नवीन अंक केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे विचारों, भावनाओं और रचनात्मकता का संगम है।

हिंदी आज बहुत ही लोकप्रिय भाषा बन चुकी है, राजभाषा के माध्यम से ग्राहकों से किया गया पत्राचार हमारे निगम को और अधिक प्रभावी बनाता है। इस अंक में प्रस्तुत लेख, कविताएँ और आलेख न केवल साहित्यिक दृष्टि से मूल्यवान हैं, बल्कि हमारी कार्य-संस्कृति और अनुभवों का भी प्रतिबिंब हैं।

आज जब नई पीढ़ी तकनीक के साथ आगे बढ़ रही है, तब हिंदी का प्रयोग हमें अपने मूल से जोड़े रखता है। मोबाइल और डिजिटल माध्यमों पर हिंदी के प्रयोग ने हमारी भाषा को और भी जीवंत बना दिया है। यही कारण है कि यह पत्रिका हर वर्ष अपने स्वरूप में और अधिक आकर्षक और प्रासंगिक बनती जा रही है।

इस अंक की तैयारी में योगदान देने वाले सभी लेखकों और सहयोगियों को मेरा हार्दिक धन्यवाद। मुझे विश्वास है कि यह अंक आपको न केवल रोचक लगेगा बल्कि हिंदी के प्रयोग के लिए प्रेरित भी करेगा।

सद्भावना पत्रिका के प्रकाशन की सफलता के लिए शुभकामनायें।

एस. गायत्री
सचिव (मा.सं.वि. एवं प्रशिक्षण)

संपादकीय

प्रिय मित्रों,

आपके समक्ष प्रस्तुत "सद्भावना" का यह अंक हमारे सामूहिक प्रयासों, रचनात्मकता और राजभाषा के प्रति प्रेम का उज्ज्वल प्रतीक है। यह अंक हमारे निगम में हिंदी की उपयोगिता और उसके प्रति हमारी गहरी निष्ठा को अभिव्यक्त करता है।

हिंदी हमारी पहचान है, संवाद का सेतु है और संस्कृति का सार है। कार्यस्थल पर इसका प्रयोग आत्मीयता, सरलता और विश्वास को स्थापित करता है। जब हम ग्राहकों और सहकर्मियों से हिंदी में संवाद करते हैं, तो अपनापन और निकटता सहज ही अनुभव होती है और यही भावना हमें अपने संवाद को सारगर्भित, सरल और प्रभावी बनाने की प्रेरणा देती है।

इस अंक में साहित्यिक रचनाओं, कविताओं और विचारों का ऐसा संगम है जो हमारे सहकर्मियों की प्रतिभा को उजागर करता है और निगम की विविधता को प्रतिबिंबित करता है। हमें विश्वास है कि यह अंक पाठकों को आनंदित करने के साथ-साथ हिंदी के प्रयोग के प्रति और अधिक प्रेरित करेगा।

इस सृजनात्मक यात्रा में योगदान देने वाले सभी साथियों को हृदय से धन्यवाद और शुभकामनाएँ।

त्रिलोकानन्द मिश्र
उप सचिव (राजभाषा)

सद्भावना: एक नाम अनेक अवतार

हाल ही के दिनों मे सोशल मीडिया की एक खबर ने मेरा ध्यान आकर्षित किया, लातूर के एक गरीब बूढ़े किसान के बारे में, पैसों की कमी के कारण उनकी पत्नी ने खेत में बैलों की जगह पर अपने पति के ही कंधे पर लकड़े का फाल रख कर खेत जोतने लगे। उनका वह दर्द देख कर हिन्दी फिल्मों में नकारात्मक भूमिका करने वाले अपने रियल लाइफ हिरो सोनू सूद जी सिर्फ एक सवाल पूछते हैं कितने बैल चाहिए बोल दीजिये और वह भेज देते हैं, इसी तरह ही दरिया दिली या गुडविल का ही दूसरा नाम सद्भावना है। इसकी मिसाल हमें कोविड के दौर में कई बार देखने को मिली और इंसानियत पर भरोसा फिर से बढ़ने लगा।

सद्भावना ये एक शब्द नहीं बल्कि एक पूरा वाक्य है, जिसके कई सारे अर्थ या मतिथार्थ मिल गए, जब मैंने इस के बारे में अपना कौतूहल जागृत कर थोड़ी सी जानकारी हासिल करनी चाही ।

सद्भावना का सीधा साधा मतलब अच्छी नियत, सदभाव या नेकनीयती वाला वर्तन। इसी सद्भावना को हम लोग अपने घर ऑफिस, समाज, देश तथा आजूबाजू के परिप्रेक्ष्य में होने वाले विशाल अर्थ के बारे में जो जो सोचने लगे तो न जाने क्या क्या बातें समझ में आ जाती हैं।

हम जैसे काम काजी लोगों के लिए इसे उनके कार्य क्षेत्र से जोड़ा जाए तो सद्भावना का नया अर्थ सामने आ जाता है और उसके कई सारे सकारात्मक उपयोग भी समझने लगे ।

1) आपसी सहयोग को बढ़ाना :- ऑफिस या कार्यालयों में इस के सिवा किसी भी तरह का काम करना आसान नहीं है ।

2) एक दूसरे के बीच में विश्वास को बढ़ाता है जो आज के जमाने में सब से महत्वपूर्ण चीज है ।

3) एक दूसरे को सपोर्ट करना या मदद करना

4) विविधता का सम्मान करना - एक दफ्तर में कई लोग कई भिन्न क्षेत्र से आते हैं उनके खान पान सोच विचार तथा बौद्धिक ज्ञान में अंतर होता है ।

कॉर्पोरेट या व्यवसाय में सद्भावना की महत्ता भी कई ज्यादा है। इसी के कारण किसी भी कंपनी की गुडविल या ब्रांड नेम तैयार होता है और बढ़ता है, व्यवसाय में बढ़ोतरी होती है साथ में जरूरी है एक दूसरे के साथ मैत्री या सामंजस्य पूर्ण संबंध :-

1) आंतरिक संबंध: इस के अंतर्गत नैतिक आचरण, कर्मचारी कल्याण और संघर्ष और समाधान जैसे बिन्दु ज्यादा महत्ता रखते हैं ।

2) बाह्य संबंध में सामुदायिक सहभागिता, अनेक तरह की प्रथाऐं जैसे तत्व हैं जो कॉर्पोरेट कारोबार को बढ़ाते हैं या डुबाते हैं ।

स्पोर्ट्स या खेलों के मैदानों में सद्भावना का महत्व अनन्यसाधारण है, जहाँ खेल से सद्भाव बढ़ता है । लोगों के बीच में एक प्रकार का अपनापन बढ़ रहा है, खेल भावना का अभिन्न हिस्सा है सद्भावना या गुडविल।

गत वर्ष 2024 के पेरिस ओलिम्पिक में अपने नीरज चोपड़ा (गोल्डन बॉय) ने रजत पदक जीतने पर दिखाई हुई खिलाड़ी वृत्ति का जवाब ही नहीं। पाकिस्तान के अर्शद नदीम को सुवर्ण जीतने पर जिस जिंदा दिली के साथ उनका अभिनंदन किया और उसके बाद उनकी माँ का कहना कि सुवर्ण जीतने वाला भी मेरा दूसरा बेटा ही है, इस के लिए बहुत बड़ा नेक दिल चाहिए ।

सद्भावना खेल (गुडविल गेम्स) नाम की एक खेल प्रतियोगिता भी है जिसकी शुरुआत 1986 में हुई। इसका उपयोग शीत युद्ध (कोल्ड वार) के दौरान राजनैतिक तनाव को कम करने के लिए और आपस में प्यार और भाई चारा बढ़ाने के लिए किया गया । उसका मुख्य उद्देश था दो देशों के बीच की तकरार को खत्म करना और जगत की शांति के लिए

प्रयास करना । ओलिम्पिक से थोड़े अलग ये खेल होते हैं और इन में विजेताओं को मेडल के बजाय धन राशि दी जाती है। किन्तु 2001 के बाद शायद सद्भावना खेल बंद हो गए ।

आज कल जो रशिया युक्रेन के बीच में करीब 3 वर्षों से युद्ध चल रहा है, उसका युक्रेन के साथ विश्व पटल पर भारी याने भयावह असर देखने को मिला। पूरे विश्व की शांति नष्ट करने का काम इस युद्ध ने किया। किन्तु एक नयी सीख भी रशिया जैसे ताकतवर देश को मिली। किसी भी तरह की हार या जीत किसी देश के आकार, लोक संख्या पर निर्भर नहीं करती, बल्कि वह उस देश में रहने वाले नागरिक / लोगों की अपने देश की सुरक्षा करने के लिए अपने जान का सर्वोच्च बलिदान देने की मंशा पर भी निर्भर करता है ।

अगर राज्यों के बारे में बात करें तो सिक्किम, लद्दाख, कश्मीर जैसे भारतीय राज्यों में भारतीय सेना के साथ मिल कर सदभावना से नागरिकों के साथ रिश्ते बनाने का काम किया गया । जिसका क्रेडिट जाता है हमारे जाँबाज़ भारतीय जवानों को ।

कश्मीर में बच्चों के लिए पाठशाला का निर्माण करना, उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करना, महिलाओं की सुरक्षा का प्रबंध करना, आतंकी हमलों के बीच में शांति को बढ़ावा देना जैसे कई अच्छे काम किए जाते हैं। सिक्किम जैसे छोटे राज्य के लिए साफ सुथरा पानी, रास्ते बनाना जैसे कई काम अपनी सेना कर रही है। हमारे मुंबई शहर को भी आर्मी से बनाया हुआ एक फुट ओवर ब्रिज रेलवे यात्रियों को मिला, जो एल्फिस्टोन रोड और परेल स्टेशन को जोड़ता है । हमारे जवानों ने इसे बहुत कम दिन में बनाकर पूरा कर दिया याने कुल (119) दिन। सिर्फ उसका कारण बना एल्फिस्टोन स्टेशन पर ब्रिज टूटने का एक दर्दनाक हादसा और मासूम लोगों के हताहत होने का ।

अंततः अपना भारतीय जीवन बीमा निगम और उसकी अपने कर्मचारी, पॉलिसी धारक और शेयर धारकों के प्रति जो सद्भावना देखने को मिलती है उसकी मिसाल शायद ही भारत में किसी और बीमा कंपनी में दिखाई दे । अपने 68 वर्षों के लगातार कार्यकाल में लोगों के प्रति अपनी लगन, प्रतिबद्धता, जताते हुए लोगों को पैसे बचाने की आदत को बढ़ावा देना, वित्तीय सुरक्षा से अपने देश के लोगों को सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक योगदान देते हुए, उनकी हर समस्या या आपदा में भारतीय नागरिकों का साथ देने वाली वित्तीय संस्था, हाल ही में अहमदाबाद के सिविल अस्पताल में एयर इंडिया के लंदन जाने वाले बोइंग विमान के हादसे में मारे गए लोगों के परिवार वालों को बीमा से जुड़े हर सवाल के बारे में गाइड करने और अन्य प्रकार से सहायता करने का काम हमारी एलआईसी ने किया ।

सद्भावना या गुडविल को नए शब्दों में कुछ इस तरह कहा गया। एक दूसरे के प्रति सद्भावना एक सकारात्मक विचार है, जो आपके शख्सियत को निखारता है, ये आप के शरीर के लिए अच्छा है, ये आप के रक्त को शुद्ध करता है, बाहुबल को बढ़ाता है और अंत में आप को एक सर्वोत्तम इन्सान बनाता है । तो चलो इसी सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ें पूरे विश्व के सभी मानव, प्राणी मात्र के हितों के लिए सद्भावना के साथ ।

जय हिन्द ।

अनुपमा तांबे
सू.प्रो. (ख.वि.प्र.)

परिवर्तन के युग में हिन्दी की भूमिका

आज का युग परिवर्तन का युग है। यह परिवर्तन केवल तकनीकी या औद्योगिक नहीं, बल्कि सामाजिक, भाषाई, मनोवैज्ञानिक, वैचारिक और सांस्कृतिक स्तरों पर भी हो रहा है। एक ओर हम डिजिटल प्रगति के शिखर पर हैं, वहीं दूसरी ओर हमारी पारंपरिक भाषाएँ और मूल्य भी समय की कसौटी पर खरे उतरने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे समय में यह आवश्यक हो गया है कि हम अपनी राजभाषा हिन्दी की भूमिका का पुनः मूल्यांकन करें - केवल भाषा के रूप में नहीं, बल्कि एक सशक्त संवाद माध्यम, प्रशासनिक औजार और सांस्कृतिक विरासत के रूप में।

1. सामाजिक परिवर्तन और हिन्दी की भूमिका

वर्तमान समय में समाज बहुआयामी परिवर्तनों से गुज़र रहा है। शिक्षा, रोजगार, जीवनशैली, परिवार संरचना, संप्रेषण के साधन - सब कुछ बदल रहा है। इन परिवर्तनों के बीच भाषा एक सेतु की भूमिका निभाती है।

हिन्दी, भारत के एक बड़े भूभाग की संपर्क भाषा है। उत्तर भारत के राज्यों से लेकर देश के विविध हिस्सों में यह संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। ऐसे में सामाजिक स्तर पर हिन्दी का उपयोग केवल संवाद तक सीमित नहीं, बल्कि यह लोगों को जोड़ने, सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने और विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का सशक्त साधन बन चुकी है।

2. तकनीकी युग और डिजिटल हिन्दी

तकनीक ने जिस तेजी से हमारे जीवन को प्रभावित किया है, उतनी ही तेजी से हिन्दी ने डिजिटल मंचों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

आज स्मार्टफोन का अधिकांश उपयोगकर्ता वर्ग हिन्दी बोलने-पढ़ने-लिखने वाला है। Google, Microsoft, Facebook, Instagram, Amazon जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने प्लेटफॉर्म्स पर हिन्दी को प्राथमिकता दे रही हैं। YouTube पर हिन्दी कंटेंट की लोकप्रियता इसका स्पष्ट प्रमाण है।

सरकारी योजनाओं के प्रचार, सरकारी पोर्टल्स पर जानकारी, मोबाइल ऐप्स, ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल भुगतान तक में हिन्दी की सक्रियता बढ़ रही है।

एलआईसी जैसे संगठनों में भी पोर्टलों (ANANDA, eFEAP, etc.), एसएमएस सेवाओं, ग्राहक संवाद, और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हिन्दी का समावेश एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे हिन्दी न केवल राजभाषा बनी रहती है, बल्कि डिजिटल सक्षम भाषा भी बनती है।

3. प्रशासनिक एवं राजभाषा के रूप में हिन्दी

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। इसका उद्देश्य प्रशासन को आमजन के निकट लाना था।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समय-समय पर हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए योजनाएँ बनाई जाती हैं। कार्यालयों में कार्यान्वयन की त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट, निरीक्षण, प्रशिक्षण, प्रतियोगिताएँ, राजभाषा समितियों की बैठकें - ये सभी हिन्दी के संस्थागत प्रयोग को बल देते हैं।

एलआईसी जैसे प्रतिष्ठानों में हिन्दी कार्यशालाएँ, त्रैमासिक पत्रिका, हिन्दी दिवस कार्यक्रम, हिन्दी प्रशिक्षण, शब्दावली सूची तथा सॉफ्टवेयर का स्थानीयकरण इस दिशा में प्रभावशाली कदम हैं।

4. आर्थिक दृष्टिकोण से हिन्दी की शक्ति

हिन्दी न केवल एक भाषा है, बल्कि एक विशाल उपभोक्ता समूह की भाषा भी है। विज्ञापन, बाजार अनुसंधान, विपणन, बीमा, बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन - हर क्षेत्र में हिन्दी का आर्थिक पक्ष स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आया है।

एलआईसी जैसे संस्थान, जिनकी पहुँच देश के अंतिम व्यक्ति तक है, यदि हिन्दी में अपने उत्पादों और सेवाओं की जानकारी दें, तो वे ग्राहकों के साथ अधिक गहरे संबंध बना सकते हैं।

ग्राहक के मन की भाषा में संवाद - विश्वास की नींव है। यही सिद्धांत हिन्दी को व्यावसायिक सफलता का औजार भी बनाता है।

5. नवाचार (Innovation) और हिन्दी

नवाचार केवल तकनीक में नहीं होता, भाषा में भी नवाचार आवश्यक है। हिन्दी को तकनीकी संदर्भों में उपयोगी बनाने हेतु उसके शब्दकोष, अभिव्यक्तियों और संदर्भों को समकालीन बनाना होगा।

प्रशिक्षण सामग्री, LMS मॉड्यूल, ई-पुस्तिकाएँ, वीडियो ट्यूटोरियल्स- इन सबको हिन्दी में अनुवाद कर या मूल रूप से हिन्दी में तैयार कर नवाचार के साथ जोड़ा जा सकता है।

AI और ChatGPT जैसे टूल्स में भी हिन्दी की समझ और अभिव्यक्ति लगातार बेहतर हो रही है। आने वाले समय में हिन्दी आधारित वॉयस असिस्टेंट, चैटबॉट्स और संवादात्मक AI मॉडल्स व्यावसायिक प्रक्रियाओं का अंग बन सकते हैं।

6. शिक्षण और प्रशिक्षण में हिन्दी की उपयोगिता

हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण देना केवल भाषाई सुलभता ही नहीं, बल्कि ज्ञान के आत्मसात में सहायक होता है।

प्रशिक्षण संस्थानों में जब हिन्दी माध्यम का उपयोग होता है, तो कर्मचारियों का आत्मविश्वास बढ़ता है, उनका सहभाग बढ़ता है, और सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी होती है।

एलआईसी जैसे संस्थानों में क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्रों पर हिन्दी भाषा में शिक्षण-सामग्री, डिजिटल पाठ्यक्रम और परीक्षा सामग्री को बढ़ावा देना सीखने की समावेशिता को बल देता है।

7. हिन्दी और सांस्कृतिक पहचान

हिन्दी केवल संवाद की भाषा नहीं, हमारी संस्कृति की वाहक भी है। इसमें हमारी परंपराएँ, कहावतें, लोक गीत, मुहावरे, साहित्य, दर्शन और भावनाएँ समाहित हैं।

जब हम हिन्दी में बात करते हैं, तो न केवल शब्दों का आदान-प्रदान करते हैं, बल्कि एक सामूहिक चेतना का हिस्सा बनते हैं। हिन्दी हमें हमारे मूल से जोड़े रखती है - यह एक भाषा नहीं, एक संवेदनशील परंपरा है।

'सद्भावना', 'संपर्क', 'आस्था', 'विश्वास', 'संरक्षण', 'कर्तव्य', जैसे शब्द केवल अनुवाद नहीं, एक विचारधारा को अभिव्यक्त करते हैं।

8. हिन्दी और युवा पीढ़ी

आज की युवा पीढ़ी तकनीक के साथ पली-बढ़ी है। वह सोशल मीडिया, इंस्टाग्राम, स्टार्टअप्स, पॉडकास्ट्स, यूट्यूब चैनल्स के माध्यम से अभिव्यक्ति कर रही है। यह देखना सुखद है कि इनमें से बड़ी संख्या हिन्दी में भी सृजन कर रही है।

कई युवा लेखक, व्लॉगर्स, स्टोरीटेलर्स, हिन्दी में रील्स, कविताएँ, व्यंग्य और विश्लेषण प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे स्पष्ट होता है कि हिन्दी अब केवल पुस्तकालयों तक सीमित नहीं, बल्कि वह 'वायरल' हो रही है।

संस्थान यदि इस ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में प्रयोग करें, तो हिन्दी को एक नवीन ऊँचाई दी जा सकती है।

9. हिन्दी और मानवीय संबंध

भाषा का सबसे बड़ा कार्य है - संबंध बनाना। हिन्दी अपने स्वरूप में आत्मीय, सरल और भावनात्मक भाषा है। यही कारण है कि जब किसी कर्मचारी या ग्राहक से हिन्दी में संवाद होता है, तो उनमें अपनत्व और पारदर्शिता का अनुभव होता है।

एलआईसी जैसे संगठनों में जब क्षेत्रीय और ग्रामीण शाखाओं में हिन्दी के माध्यम से संवाद होता है, तो संगठन और व्यक्ति के बीच की दूरी घटती है, एक विश्वास का माहौल बनता है, जो संस्था की स्थायित्व और साख को मज़बूत करता है।

10. भविष्य की रणनीति - हिन्दी को सशक्त बनाने हेतु सुझाव

1. **हिन्दी टर्मिनोलॉजी का विकास:** तकनीकी, बीमा, वित्त और प्रबंधन की शब्दावली को हिन्दी में सटीक और प्रचलित रूप में विकसित करना।
2. **हिन्दी में ऐप्स व पोर्टल्स:** मोबाइल ऐप्स, इन्ट्रानेट, एंटरप्राइज सॉफ्टवेयर आदि को हिन्दी इंटरफेस में सुलभ बनाना।
3. **हिन्दी संवाद का विस्तार:** ग्राहक सेवा, हेल्पलाइन, चैटबॉट, शिकायत निवारण आदि में हिन्दी को प्रमुख माध्यम बनाना।
4. **संगोष्ठियाँ और वेबिनार:** हिन्दी में विषय-वस्तु आधारित चर्चाओं और व्याख्यानों का आयोजन करना।
5. **राजभाषा समितियों को सक्रिय करना:** समीक्षा को केवल रिपोर्टिंग तक सीमित न रखते हुए, उसे सृजनात्मक सहयोग और प्रोत्साहन का माध्यम बनाना।

उपसंहार

आज हिन्दी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक संभावना है - जो परंपरा और प्रगति दोनों की संगिनी बन सकती है। परिवर्तन के इस युग में हिन्दी को केवल बनाए रखना ही उद्देश्य नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे आगे बढ़ाना, सशक्त बनाना और नवाचार से जोड़ना हमारा दायित्व होना चाहिए।

यदि हम हिन्दी को केवल 'राजभाषा' न मानकर 'रचनात्मक संसाधन' के रूप में देखें, तो यह भाषा देश की विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण कड़ी बन सकती है।

"हिन्दी केवल बोलने की नहीं, सोचने की भाषा बने - यही परिवर्तन के युग में इसकी सच्ची भूमिका है।"

कुलवंत सिंह अरोरा
स.प्र.अ. (प्रोग्रामर-1),
श.शा.क्र. 2, इंदौर (म.प्र.)

मानव बनाम कृत्रिम बुद्धिमत्ता - सोच की जंग

आज आधुनिक बुद्धिमत्ता के दौर में कई ऐसे भी उदाहरण हैं जिनमें मानव तकनीकी विकास से ऊपर है। कौशल, जिन्हें AI कभी प्रतिस्थापित नहीं कर पाएगा और आज ही इन्हें मजबूत करने के तरीके हैं:-

1. भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)

AI कर सकता है: पाठ या स्वर से भावनाओं को पहचानना।

लेकिन केवल मनुष्य कर सकते हैं: महसूस करना, जुड़ना और अपनापन बनाना।

कैसे मजबूत करें: आज बातचीत में आंखों से संपर्क बनाएँ और बिना बाधा के ध्यानपूर्वक सुनने का अभ्यास करें।

2. मूल्यों पर निर्णय (Values Judgment)

AI कर सकता है: विकल्पों की सिफारिश करना।

लेकिन केवल मनुष्य कर सकते हैं: सांस्कृतिक और नैतिक मानदंडों के साथ बदलते निर्णयों को संरेखित करना।

कैसे मजबूत करें: जब आपको कोई कठिन निर्णय लेना हो, तो अपनी शीर्ष 3 मान्यताएँ लिखें और विकल्पों की तुलना उनसे करें।

3. मार्गदर्शन (Mentorship)

AI कर सकता है: सामान्य प्रतिक्रिया देना।

लेकिन केवल मनुष्य कर सकते हैं: सूक्ष्मता, समझ और विश्वास के साथ दूसरों का मार्गदर्शन करना।

कैसे मजबूत करें: किसी जूनियर सहयोगी से पूछें, "आज मैं आपकी किस चीज़ में मदद कर सकता हूँ?"

4. नैतिक तात्कालिकता (Ethical Improvisation)

AI कर सकता है: मौजूदा नियमों और नीतियों को लागू करना।

लेकिन केवल मनुष्य कर सकते हैं: तब संतुलन बनाना जब नियम असफल हों या एक-दूसरे से टकराएँ।

कैसे मजबूत करें: हाल ही में लिया गया कोई ग्रे-एरिया निर्णय याद करें और लिखें कि आपने प्रतिस्पर्धी प्राथमिकताओं को कैसे संतुलित किया।

5. विश्वास और ईमानदारी (Trust and Integrity)

AI कर सकता है: विश्वसनीयता की नकल करना।

लेकिन केवल मनुष्य कर सकते हैं: निरंतरता, जवाबदेही और ईमानदारी पर आधारित प्रतिष्ठा बनाना।

कैसे मजबूत करें: आज एक छोटा वादा करें, चाहे वह कितना भी साधारण क्यों न हो, और उसे पूरा करें।

6. हास्य और जुड़ाव (Humor and Connection)

AI कर सकता है: हास्य के पैटर्न की नकल।

लेकिन केवल मनुष्य कर सकते हैं: ऐसे मज़ाक और संबंध बनाना जो वास्तविक अपनापन लाएँ।

कैसे मजबूत करें: आज किसी सहयोगी या मित्र के साथ मज़ेदार कहानी या हल्का पल साझा करें।

7. मौलिक सोच (Original Thinking)

AI कर सकता है: मौजूदा विचारों को दोहराना।

लेकिन केवल मनुष्य कर सकते हैं: पैटर्न तोड़ना और ऐसे नए विचार लाना जो संस्कृति को आगे बढ़ाएँ।

कैसे मजबूत करें: आज किसी एक धारणा को चुनौती दें और खुद से पूछें - "अगर इसका उल्टा सच होता तो?"

8. दूसरों को प्रेरित करना (Inspiring Others)

AI कर सकता है: मिशन स्टेटमेंट की नकल।

लेकिन केवल मनुष्य कर सकते हैं: दिलों को छूना और लोगों को एक साहसी भविष्य की ओर ले जाना।

कैसे मजबूत करें: क्यों यह लक्ष्य आपके लिए व्यक्तिगत है, इसकी एक कहानी साझा करें और दूसरों से भी साझा करने को कहें।

9. सच्चा सहयोग (True Collaboration)

AI कर सकता है: डेटा और शेड्यूल का समन्वय करना।

लेकिन केवल मनुष्य कर सकते हैं: तनाव, छिपे हुए उद्देश्य और टीम की गतिशीलता को समझना।

कैसे मजबूत करें: अपनी टीम बातचीत में पूछें - "मैं क्या मिस कर रहा हूँ?" और ध्यान से सुनें।

10. वार्तालाप (Negotiation)

AI कर सकता है: उपलब्ध डेटा से विन-विन (दोनों की जीत) वाले परिणामों की गणना।

लेकिन केवल मनुष्य कर सकते हैं: यह समझना कि कब मानना है, कब टालना है, कब बाहर निकलना है या कब सौदेबाज़ी करनी है।

कैसे मजबूत करें: अभ्यास करें कि वास्तविक समय में बातचीत को कैसे समझें और संचालित करें।

11. व्यक्तिगत साहस (Personal Courage)

AI कर सकता है: संभावनाएँ और सिफारिशें देना।

लेकिन केवल मनुष्य कर सकते हैं: कठिन निर्णय के पीछे खड़ा रहना जब डेटा स्पष्ट उत्तर न दे।

कैसे मजबूत करें: आज ऐसा एक निर्णय लें जहाँ आप इनपुट लेना बंद करें और अपने निर्णय पर भरोसा करें।

गौरव सिंघल

सहायक, शाखा ब्यावरा 348

पायर

आजकल एक हिंदी फीचर फिल्म "पायर" जो कि उत्तराखंड की पृष्ठभूमि पर बनी है, ख़बरों में है । फिल्म को तालिन ब्लैक नाइट्स फेस्टिवल में ऑडिएंस अवार्ड से पुरस्कृत किया गया है । और अब यह फिल्म बेन्गुलुरु फिल्म फेस्टिवल के लिए भी नामित हुई है । आम दर्शकों के लिए अभी इसका केवल ट्रेलर ही उपलब्ध है।

पायर का अर्थ है चिता .... यह 80 वर्ष से अधिक आयु के एक वृद्ध दम्पति की कहानी है जो अपनी मृत्यु का इंतजार कर रहे हैं । क्योंकि वो एक ऐसे गाँव में रहते हैं जहाँ लोग ना के बराबर हैं। उनका एक समय का जीवंत गाँव अब वीराना हो गया है क्योंकि अधिकांश लोग शहरों को पलायन कर गए हैं। दम्पति को ये भी आस नहीं हैं कि उनके अंतिम समय में कोई उनके पास होगा। उनके अपने बच्चों ने खुद कब का उनसे किनारा कर लिया है। फिल्म उत्तराखंड की बेहतरीन लोकेशन पर फिल्माई गयी है। ऐसा लगता है प्रकृति भी इस फिल्म में एक पात्र है, जिसके माध्यम से भी निर्देशक ने दम्पति के अकेलेपन का फिल्मांकन बहुत ही खूबसूरती से किया है।

उत्तराखंड से होने के कारण मैं स्वयं इस बदलाव की साक्षी रही हूँ कि कैसे एक समय के भरे पूरे गाँव अब सुनसान हो गए हैं। उत्तराखंड के भूतिया गाँवों पर अक्सर बात होती है, जहाँ रोजगार की तलाश में होने वाले पलायन से गाँव के गाँव खाली हो रहे हैं । खंडहर होते घर, जंगल होते खेत और चरागाह जैसे अपनी दुर्गति पर रो रहे हों । फिल्म का विषय बरबस इस समस्या पर ध्यान दिलाता है।

बचपन में गर्मी की छुट्टियों में गांव जाने की यादें मन में हमेशा ताजा रहती हैं । खेत - खलिहान, मवेशी, जंगल सभी कुछ जैसे बाँध लेता था । प्रकृति जैसे अपना आँचल फैलाये हम परदेसियों पर अपना स्नेह लुटा रही होती थी । उस समय शहरों में अपनी जड़ें जमाने की कोशिश करते हम जैसे लोग अपने घरों वापस आते और अपना घर आँगन जैसे अपनी आँखों में बसा ले जाते । खेतों में गेहूं की पकी फसल ऐसी लगती जैसे सोने के खेत हों । अखरोट और सेबों से लदे पेड़, जंगली फलों से लदी झाड़ियाँ सब कुछ सुनहरी यादें हैं ।

शादी विवाह के मौकों पर गांव की रौनक जैसे देखते ही बनती थी। हंसी ठिठोली करती पनिहारिनों की खनकती आवाजें गाँव की पृष्ठभूमि पर बनी किसी पुरानी हिन्दी फिल्म की याद दिलाती है। दिन भर खेतों में मेहनत करके मवेशियों का चारा सानी करके साँझ ढलते ही सब अलाव जला कर इकट्ठा हो जाते और ढोल दमाऊ (एक विशेष प्रकार का ढोल) बजाते हुए गीत गाते नाचते गाते । दूर गाँव गाँव तक अँधेरे में ढोल की मंद मंद मधुर आवाज सुनायी देती ।

हल्दी, बरात, विदाई जैसे मौकों पर ढोल के साथ साथ बहुत ही मधुर मुसकबीन (भारतीय सेना में पाइपर बैन्ड द्वारा बजाए जाने वाल बैग पाइप जैसे दिखने वाला वाद्य) भी बजाया जाता जिसको याद करने मात्र से मन भाव विभोर हो जाता है । रात का दृश्य और भी मनोहर होता। घर ऊंचाई पर होने के कारण वहाँ से पूरी घाटी दिख रही होती जैसे कोई बड़ा सा कटोरा असंख्य तारों को अपने में समेटे हुए है। आसमान में भी तारे और जमीन पर भी .... अद्भुत नजारा । यादों में बसा गाँव का वो दृश्य मिटता नहीं है ।

हम कुछ भाग्यशाली रहे क्योंकि गाँव के समीप ही इंजीनियरिंग कॉलेज बनने से कुछ एक निवासियों को रोजगार मिल गया और ज्यादातर लोग गाँव छोड़ कॉलेज के आसपास जा कर बस गए। हालांकि गाँव में जो दो चार परिवार रह गए हैं, वो अपने आस पास खाली टूटे घरों और खेतों में उगते जंगली घास और झाडियों के बीच कुछ ऐसे ही जीवन यापन कर रहे हैं, जैसे इस फिल्म के ये वृद्ध दंपत्ति ।

एक बड़े परिदृश्य में उत्तराखंड में इतने वर्षों बाद कुछ बदला है, तो वो है गाँवों में सरकार द्वारा कुछ बुनियादी सुविधाओं की व्यवस्था, सड़कों का जाल और पर्यटन को लेकर कुछ जागरूकता। इसके अलावा होम स्टे जैसी सरकारी योजनाओं के माध्यम से कुछ बदलाव तो है, पर उतना नहीं कि लोग अपनी जड़ों को छोड़ कर बेहतर जीवन की आस में पलायन ना करें ।

अंत में फिल्म की कहानी सिर्फ कहानी नहीं हैं, बल्कि एक अनुरोध है उन सभी से, जो इस को बदल सकते हैं ।

अनिता बुडाकोटी
प्र.अ., कार्मिक विभाग
उ.क्षे.का.,
नई दिल्ली

कभी सोचकर तो देखें

सभ्य -सुसंस्कृत शब्दावली में हम इन्हें "स्लम" ही कहते हैं । भारत में "मलिन बस्ती /झुग्गी", ब्राजील में "फबेला", पाकिस्तान में "कच्ची आबादी" तो मलेशिया में "कम्पुग"। शहरी शोध संगठन ने इन्हें "होमग्रोन नेबरहुड" का नाम दिया ।

नाम चाहे जो दे दीजिये, दुनिया की कुल नगरीय आबादी का एक चौथाई हिस्सा बने इन "अनौपचारिक बस्ती" के रहवासियों की जिंदगी की जंग एकमेव ही है । मल्टी स्टोरी आकाश छूती बिल्डिंग्स, चकाचौंध भरी शू - शा लग्जरी कारों और रातों में बेहिसाब गुलजार पार्टियों के शोर-शराबे के पीछे अंधियारी-कंटीली-कच्ची- तंग गलियों में जिंदगी के लिए साँसे जुटाते इन बस्तियों के लोगों की आवाज कहीं खो सी जाती है।

इनकी संख्या इतनी कम भी नहीं कि इनके वजूद को नकारा जा सके। एक स्टडी के आधार पर झुग्गियों मे रहने वाले परिवारों की कुल संख्या 2001 मे 10.5 मिलियन से बढ़कर 2011 में 13.75 मिलियन हो गयी है। आज की तारीख में इस आंकड़ें की कल्पना भी थरथरा सी देती है।

"पर्यावरणीय, सामाजिक और स्वास्थ्य-जन्य" समस्याओं से दो-चार उक्त बस्ती वाले परिस्थितियों की मार और मजबूरियों से इतने अधिक विवश हो चले हैं, कि अपनी पलकों के नीचे हिलोरें लेते गुलाबी - मखमली ख्वाबों को टूटी -रिसती छतों से टपकते पानी के साथ विसर्जित कर एक एक दिन अग्निपरीक्षा की तरह काट, जो है, जितना है, उसे ही जिंदगी का पर्याय मान लेते हैं ।

ये अनौपचारिक बस्तियाँ शहर के कोलाहल - आवाजाही से इतर अधिकतर निचले या ढलान वाले क्षेत्रों में रहती है, जहाँ शहरों की प्रदूषित जल की निकासी के साथ ही बारिश की हल्की झड़ी में ही जल भराव या बाढ़ की समस्या हर दूसरे दिन मुँह बाएं होती है ।

या फिर इनका डेरा शहर के बाहरी पहाड़ी क्षेत्रों में होता है, जहाँ पूरे शहर का कचरा गगनचुम्बी पहाड़ बन, हवाओं में विष-सा घोलकर इनके लिए अनेकों बीमारियों को न्योतता सा दिख पड़ता है।

गरीबी, बेकारी और अकल्पनीय अभावों से जूझती इस घनी आबादी के लिए मुख्यतः निम्न समस्याओं मे जीवन तलाशना ही इनकी नियति बन गयी है :-

1. **"प्रदूषित वातावरण":-** "स्वच्छता में ही धन, वैभव और समृद्धि का वास होता है।" पर विडंबना है कि गंदगी, कचरे के बे-हिसाब ढेरों, बच-बचाती नालियों की असहय घुटन भरी बदबू से सराबोर प्रदूषित हवाएं न केवल इनके उत्तम स्वास्थ्य के लिए पनौती बन खड़ी होती हैं, वरन ये इनके शारीरिक /मानसिक विकास में भी बाधक हैं ।

2. **"पानी की सीमित उपलब्धता":-** चूँकि ये बस्तियाँ अनधिकृत होती हैं, इसीलिए इनके लिए किसी भी प्रकार से आधिकारिक रूप में नियमानुसार जल -आपूर्ती सम्भव नहीं । नतीजतन शुद्ध और पर्याप्त जल के अभाव के चलते ये बस्तीवासी हैजा, दस्त, पेचिश और टाइफाइड जैसी अन्य विकट जलजनित बीमारियों की चपेट में आते रहने को बाध्य हैं । साथ ही पानी की कमी के चलते न तो शारीरिक और न ही आवास स्थल में ही पर्याप्त स्वच्छता की ही पहल ये सुनिश्चित कर पाते हैं ।

3. **"शौचालयों की अनुपलब्धता":-** स्वच्छता और स्वास्थ्य पर अनेक प्रश्न चिन्ह अंकित करती है "अनौपचारिक बस्तियों" की यह वृहत कमतरता । ये समस्या इन बस्तियों की भयावहता और विद्रुपता को द्विगुणित कर जाती है ।

4. **"शिक्षा और आय से वंचित":-** सच, जहाँ एक ओर अशिक्षा मानवमात्र के लिए एक घोर श्राप सम्य ही है, वहीं शिक्षा वह दीप है, जिससे आचार - विचार - संस्कार - सभ्यता के साथ ही व्यक्तिगत विकास और आत्मनिर्भरता के मार्ग जगमग प्रशस्त

होते हैं। चिंतनीय है कि समुचित संसाधनों के अभाव में शिक्षा - रोजगार प्राप्त करना तो इनके लिए दिवा - स्वप्न के समान ही है। दो- जून की रोटी की जद्दोजहद ही इनका प्रारब्ध है ।

5. **"उच्चवर्ग की अवहेलना":-** रहन सहन के निम्न स्तर के चलते गाहे बगाहे ऊंचे तबके से अपमान के घूँट पीना, तथाकथित पढ़े लिखे वर्ग की हिकारत भरी नजरें और हृदय को छलनी करते कटाक्ष कई बार इनके आत्मविश्वास को डिगा से जाते हैं, पर इन सबका कोई तोड़ ही नहीं । क्योंकि यही सब सहना इनके लिए विधि लिखित है ।

उक्त के अतिरिक्त घनी आबादी, ताज़ी हवा -धूप के अभाव में जानलेवा संक्रामक बीमारियों का प्रकोप, प्राणघातक वायरस इन्फेक्शन होना यहाँ एक आम बात है । पैसों के अभाव में इन्हें यथा समय त्वरित चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध नहीं होती ।

उक्त के अतिरिक्त समाज की उन्नति का ग्राफ भी उक्त वृहत तबके से प्रभावित होता है, क्योंकि बेकारी -बेरोजगारी और पेट की आग ने बस्ती वालों को चोरी-लूटपाट और अनैतिक कामों मे लिप्त होने विवश कर दिया है।

हालांकि केंद्र सरकार की पाँचवी पंचवर्षीय योजना में इन बस्तियों में सुधारात्मक कदम की योजना के चलते पीने के पानी, मार्गों की मरम्मत, प्रकाश व्यवस्था, सार्वजनिक शौचालयों व स्नानागारों जैसी बुनियादी सुविधाओं का विशेष प्रावधान था। किन्तु बाद में उक्त योजना को 1974 में इसे राज्यों को हस्तांतरित कर दिया गया ।

"सबका साथ, सबका विकास" इसी तारतम्य में देश समाज के प्रति अपने नैतिक दायित्वों की प्रतिपूर्ति हेतु सरकारी / गैर सरकारी अथवा निजी संस्थाओ के साथ ही अन्य कई सारे एन. जी ओ. और यहाँ तक कि कॉलेज के युवा वर्ग भी इन बस्तियों मे बच्चों के साथ ही प्रौढ शिक्षा, महिलाओं के लिए लघु उद्योगों में शिरकत के साथ ही सफाई का महत्व, संतुलित पौष्टिक आहार, महिला स्वास्थ्य के प्रति चैतन्यता की मुहिम को जन आंदोलन बनाने हेतु सतत प्रयत्नशील हैं ।

अंततः मनन योग्य हैं यह दैनंदिन कामों में हमारा हाथ बटाने, धोबी, मिस्त्री, प्लंबर, जैसे अनेक छोटे किन्तु बेहद महत्वपूर्ण कामों को करने, हमारी चमचमाती - पौश कॉलोनियों से कूड़ा - कचरा समेट हमारे लिए स्वास्थ्यकर और प्रफुल्लित वातावरण निर्मित करने बढ़चढ़ कर भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। ये कहना लाजिमी होगा कि यदि इनका सहयोग न हो तो हमारी व्यवस्थित - सुदृढ़ सुचारु दिनचर्या की कल्पना भी सम्भव नहीं ।

साथ ही इन घनी अव्यवस्थित बस्तियों के घुप्प अंधेरे में कई सारी ईश्वरीय वरदान स्वरुप ऐसी प्रतिभाएं भी हैं, जो अभावों, समुचित यथासमय मार्गदर्शन के अभाव में गुमनामी के अंधेरों में खो जाती हैं। पर वह आस का दीप जला, पलक पावडे बिछा, अपने भवितव्य को इंद्रधनुषी रंगों से सजाने के लिए किसी देवदूत का इंतजार करता आजन्म जंग लड़ते ही रहता है ।

आइये, मिलकर इन बस्तियों के रहवासियों को उनके हिस्से की कुनकुनी धूप दिलाने के लिए एक कदम आगे बढ़ाते हैं। जरूरत है पहल के लिए मोर्चा संभालने वाले की, फिर तो कारवां बनता जायेगा और इतनी बड़ी आबादी के हुनर के साथ हमारा देश-समाज कुछ नये आयाम स्थापित करने की दिशा में कदम बढ़ायेगा ।

अंजली खेर
शाखा कार्यालय क्र. 2
भोपाल

हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का अन्तर्सम्बन्ध

भारत एक बहुभाषी देश है जहाँ हिन्दी के साथ-साथ कई अन्य समृद्ध भाषाएँ बोली जाती हैं। इन भाषाओं का आपस में गहरा संबंध है, जो न केवल भाषाई स्तर पर, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारतीय भाषाओं के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान सदियों से चला आ रहा है। यह कई रूपों में परिलक्षित होता है ।भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य में अनेक समान विषय, पौराणिक कथाएँ, लोककथाएँ और नैतिक मूल्य पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, रामायण और महाभारत जैसी महाकाव्य कथाएँ विभिन्न भाषाओं में अलग-अलग शैलियों में लिखी गई हैं, लेकिन उनका मूल संदेश और पात्र समान हैं। यह समानता भाषाओं के माध्यम से हमारी साझा सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य शैलियाँ, जैसे भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी, आदि, विभिन्न भाषाओं के गीतों और भजनों का उपयोग करती हैं। इससे भाषाओं के बीच एक सेतु का निर्माण होता है, जो विभिन्न भाषाई समुदायों को सांस्कृतिक रूप से जोड़ता है। विभिन्न क्षेत्रों की लोक परंपराएँ, त्योहार और रीति-रिवाज अक्सर एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं। इन परंपराओं से जुड़े गीत, कहानियाँ और कहावतें एक भाषा से दूसरी भाषा में यात्रा करती हैं, जिससे सांस्कृतिक एकता मजबूत होती है।

भाषाएँ समाज में संवाद और समझ को बढ़ावा देती हैं। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का अन्तर्सम्बन्ध सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करता है।

विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच संवाद को बढ़ावा देने में हिन्दी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, विशेषकर उत्तर भारत में। यह विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि के लोगों को एक-दूसरे के करीब लाती है, जिससे सामाजिक सद्भाव बढ़ता है। जब लोग एक भाषाई क्षेत्र से दूसरे भाषाई क्षेत्र में प्रवास करते हैं, तो वे अपनी भाषा और संस्कृति को भी साथ ले जाते हैं। इससे नई जगहों पर भाषाओं का मिश्रण होता है और विभिन्न समुदायों के बीच घुलना-मिलना आसान होता है। उदाहरण के लिए, दक्षिण भारतीय राज्यों में हिन्दी बोलने वालों की बढ़ती संख्या और उत्तर भारतीय राज्यों में दक्षिण भारतीय भाषाओं के प्रति बढ़ती रुचि इसका प्रमाण है।

भाषाओं के माध्यम से एक-दूसरे की संस्कृति को जानने और समझने से पारस्परिक सम्मान की भावना विकसित होती है। यह भाषाई विविधता को एक शक्ति के रूप में देखने में मदद करता है।भाषाएँ किसी भी राष्ट्र की पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती हैं। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का अन्तर्सम्बन्ध राष्ट्रीयता की भावना को मजबूत करता है । सभी भाषाएँ राष्ट्रीय भाषाएँ हैं, हाँ, यह सत्य है कि हिन्दी का भौगोलिक क्षेत्र बड़ा है ।

विभिन्न भाषाओं के बावजूद, भारत की विविधता में एकता हमारी राष्ट्रीय पहचान का एक अभिन्न अंग है। सभी भारतीय भाषाएँ मिलकर भारत की भाषाई समृद्धि को दर्शाती हैं, जो राष्ट्रीय गौरव का विषय है । भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है, जो सभी को समान महत्व देती है। यह भाषाई विविधता के प्रति हमारे राष्ट्र के सम्मान को दर्शाता है और विभिन्न भाषाई समूहों को अपनी पहचान बनाए रखने का अवसर देता है। भारत का राष्ट्रगान 'जन गण मन' और राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' विभिन्न भारतीय भाषाओं में गाए जाते हैं, जिससे सभी भाषाई समूहों को राष्ट्रीय भावनाओं से जुड़ने का अवसर मिलता है।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, विभिन्न भाषाओं के नेताओं और विचारकों ने अपनी-अपनी भाषाओं में जनता को एकजुट किया। इन भाषाओं ने एक-दूसरे के विचारों और संदेशों को आगे बढ़ाने में मदद की, जिससे राष्ट्रीय आंदोलन को बल मिला।

संक्षेप में, हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच का गहरा संबंध भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। यह संबंध हमें अपनी साझा विरासत को समझने, एक-दूसरे का सम्मान करने और एक मजबूत तथा एकजुट राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ने में मदद करता है।

भाषाई चुनौतियों और उनके समाधान के बारे में जानना निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण पहलू है। भारतीय भाषाओं के समक्ष चुनौतियाँ और संभावित समाधानों पर चर्चा भी आवश्यक है ।

भारत में भाषाई विविधता जहाँ एक ओर हमारी शक्ति है, वहीं कुछ चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है। इन चुनौतियों को समझना और उनके समाधान खोजना हमारे भाषाई सौहार्द और राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक है। कुछ प्रमुख चुनौतियाँ भी हैं।

वैश्वीकरण और रोजगार के अवसरों के कारण अंग्रेजी का प्रभुत्व बढ़ता जा रहा है, खासकर उच्च शिक्षा, कॉर्पोरेट जगत और शहरी क्षेत्रों में। इससे कई बार क्षेत्रीय भाषाओं की अनदेखी होती है और उन्हें कमतर आंका जाता है।

विभिन्न भाषाई समूहों के बीच कभी-कभी अपनी भाषा को श्रेष्ठ साबित करने की होड़ देखी जाती है, जिससे भाषाई विवाद उत्पन्न हो सकते हैं और राष्ट्रीय एकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

कई भारतीय भाषाएँ अभी भी डिजिटल प्लेटफॉर्म पर पूरी तरह से विकसित नहीं हुई हैं। इंटरनेट पर सामग्री की कमी, फोंट की समस्याएँ और टाइपिंग टूल्स का अभाव इन भाषाओं के उपयोगकर्ताओं के लिए एक चुनौती है।

क्षेत्रीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षण सामग्री, किताबें और अनुसंधान को अक्सर पर्याप्त संसाधन नहीं मिल पाते हैं।

कुछ भाषाओं में क्षेत्रीय बोलियों के कारण मानकीकरण की समस्या आती है, जिससे शिक्षा और सरकारी कार्यों में एकरूपता बनाए रखना मुश्किल हो जाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग जैसे क्षेत्रों में भारतीय भाषाओं के लिए पर्याप्त डेटासेट और विकसित उपकरण उपलब्ध नहीं हैं, जिससे इन भाषाओं में तकनीकी विकास धीमा हो जाता है। इसके लिए कुछ प्रभावी नीतिगत प्रयास आवश्यक हैं ।

बच्चों को प्राथमिक स्तर पर उनकी मातृभाषा में शिक्षा देना उनकी नींव मजबूत करता है और सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाता है।

त्रि-भाषा सूत्र (मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा, हिन्दी और अंग्रेजी) को सही तरीके से लागू करना आवश्यक है, जिसमें तीनों भाषाओं को समान महत्व दिया जाए और किसी पर भी अनावश्यक भार न डाला जाए। भारतीय भाषाओं में अधिक से अधिक डिजिटल सामग्री (ई-बुक्स, वेबसाइट्स, ऐप्स) बनाने के लिए प्रोत्साहन देना।

भारतीय भाषाओं के लिए उन्नत AI आधारित अनुवाद उपकरण, स्पीच-टू-टेक्स्ट, टेक्स्ट-टू-स्पीच और OCR (ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकॉग्निशन) जैसे टूल विकसित करने में निवेश करना।

सभी भाषाओं के लिए यूनिकोड फोंट और कीबोर्ड लेआउट को बढ़ावा देना ताकि विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भाषाओं का बेहतर उपयोग हो सके।

विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच सांस्कृतिक कार्यक्रमों, साहित्य मेलों और भाषा सीखने के अभियानों का आयोजन करना।

लोगों को अन्य भारतीय भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित करना, जिससे अंतर-सांस्कृतिक समझ और सद्भाव बढ़े।

विभिन्न भाषाओं के विकास, अनुसंधान और प्रकाशन के लिए पर्याप्त सरकारी कोष आवंटित करना।

स्थानीय प्रशासन और सरकारी सेवाओं में क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग को अनिवार्य करना, जिससे आम जनता को सुविधा हो।

मीडिया (प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, डिजिटल) को विभिन्न भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री बनाने और उसे बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करना।

भाषाओं की नई शब्दावली विकसित करना और विभिन्न क्षेत्रों में मानकीकरण के प्रयासों का समर्थन करना।

इन समाधानों पर काम करके हम न केवल अपनी भाषाओं को संरक्षित और विकसित कर सकते हैं, बल्कि अपनी भाषाई विविधता को और अधिक मजबूत कर सकते हैं, जिससे हमारी सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय एकता और भी दृढ़ होगी।

भूपेन्द्र प्रताप सिंह
प्राचार्य, अभिकर्ता प्रशिक्षण केन्द्र
शाखा फर्रूखाबाद, आगरा मंडल

रु-ब-रु

कान्हा तुम्हारी छबी, मेरे रु-ब-रु होती है।
जहाँ दिख जाते हैं तुम्हारे पगचिन्ह,
वहीं से मेरी दुनिया शुरू होती है।

उच्चासन पर बैठे सम्भावितों के ताने सुनकर
खुद की प्रशंसा में, उन्होंने खुद गाए हुए गाने सुनकर
जब बजने लगते हैं मेरे कान...
और मैं भी अनसुनी कर देती हूँ.....
रास्ते पर रोते बालकों की पुकार ... तब ....
तुम सजा लेते हो अपने कानों में मुझे.. और
मैं कुंडलों की मधुर झंकार सुनने लगती हूँ।
वहीं से मेरी दुनिया शुरू होती है।

धड़कती जवानी की भड़कती मिसालें,
दानवी प्रचारों के नुकीले भाले
मेरी आंखो में चुभ चुभ कर मुझे अँधा बना देते हैं...
और फिसलने लगते हैं मेरे भी पैर... तब ....
तुम ही थाम लेते हो मेरी बाहें.. और
बना लेते हो मुझे अपनी आँखों का काजल
तुम्हारी नजरों से मैं दुनिया देखने लगती हूँ।
वहीं से मेरी दुनिया शुरू होती है।

जिंदगी की विषमताओं से लड़ते हुए,
अत्याचार के आगे झुकते हुए ....
जब झुलसने लगती हूँ मैं भी बदले की आग में और....
जलाने लगती हूँ अपनों के ही घर... तब ...

अपने होठों की बंसी बनाकर
तुम्ही फूंकते हो अपने प्राण मुझ में
मैं शीतल स्वर गंधार बन जाती हूँ
वहीं से मेरी दुनिया शुरू होती है।

आसमाँ की बुलन्दियों को छूने जाती हूँ जब मैं,
और मेरे ही दोस्त मेरी राहों में काँटे बिखेरते हैं....
अपाहिज हो जाती हूँ मैं
दुनियापर बोझ बन जाती हूँ... तब ....
तुम्ही लेते हो अपनी शरण में मुझे...
तुम्हारे चरणों के घुंगरू बनकर मैं नाचने लगती हूँ...
वहीं से मेरी दुनिया शुरू होती है।

कान्हा तुम्हारी छबी, मेरे रु-ब-रु होती है।
जहाँ दिख जाते हैं तुम्हारे पगचिन्ह,
वहीं से मेरी दुनिया शुरू होती है।

दीपा आगाशे
प्रशासनिक अधिकारी,
कार्मिक विभाग, केंद्रीय कार्यालय

माँ की ममता

माँ की ममता, है सबसे प्यारी,
दुनिया में न कोई है बराबरी।

उसकी गोद में जन्नत-सी समाई,
हर पल उसने मुझ पर ममता बरसाई।

जब भी मैं डर के रोता था,
उसके आँचल में छुपके सोता था।

वो मीठी लोरियाँ मुझे सुनाती,
सपनों की दुनिया में हर पल ले जाती।

मेरी हर खुशी में वो हँसती गाती
मेरे हर ग़म में सहमकर रोती।

खुद को भूलकर मुझे संवारती,
मेरे लिए हर मुश्किल उठाती ।

उसकी दुआओं में है वो शक्ति,
जो हर विपदा से मुझे बचाती ।

उसकी डाँट में भी है प्यार छुपा,
जो सही राह मुझे दिखलाती।

वो भूखी रहकर मुझे खिलाती,
मेरी एक हँसी पर वो खिलखिलाती,

मेरी हर ख्वाहिशों को वो पूरी करती
माँ तुम मेरी दुनिया हो

तुम्हारे बिना सब सूना है
तुम्हारी ममता की छाँव में ही मुझे हमेशा रहना
माँ तुझ में ही मेरा संसार और हमेशा करना मुझसे प्यार।

दीपांकर चक्रवर्ती
सहायक सचिव, उद्यम जोखिम प्रबंधन विभाग
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई

लुप्त हो गये वो रंग

ज़िंदगी का इक पल, रंग लेकर आयेगा हर पल,
उम्मीद का हर पल, इंतजार का हर पल ।

चाहे फिर झर-झर झरने की झंकार हो,
चाहे नदियों की कल-कल आवाज़ हो ।

बहता जल, शांत थल और स्थिर गगन,
सुंदर, सुहानी प्रकृति की आवाज़ हो ।

कितना हसीन, सुहाना है यह मंजर,
ख़ुदा की कुदरत हम पर है मेहरबान ।

फिर भी दिल से उठती है एक आवाज़,
सुबह, शाम, रात हो या आज-कल ।

कुदरत की आगोश में सिमटे सभी रंग,
फिर क्यों लगते नीरस, इंसान जमीन और आसमान ।

क्यों अब लगता है बसंत हमें पतझड़,
होली भी लगती है आज बिल्कुल बेरंग ।

रंगों की कला रचने वाले भी हैं परेशान,
देखकर दुनिया के रंग वो भी हैं हैरान ।

रंग जो थे कभी प्रेम और सौहार्द के पैगाम,
कभी जो गुलाल देता था भाईचारे का पैगाम ।

आज वही रंग बन बैठे हैं नफरतों के संग्राम,
रंगों की वो दुनिया, अब फ़ीकी पड़ गई ।

जहाँ इंसानियत थी वहाँ दूरियाँ बढ़ गई,
आज हमने रंगों को धर्म का नाम दिया,
किसी को हिन्दू तो, किसी को मुस्लिम करार दिया ।

दिल से उठती है आवाज़ हर एक पल,
सुबह-शाम हो या फिर हो आजकल ।

क्या होगा रंग अब, इस जमीं का,
जब न होगी ये कायनात (दुनिया) और न होगा इंसान,
अरे! हमने ही तो कायनात को बेनूर किया ।

सांप्रदायिकता ने छीन ली मोहब्बत की वो रौशनी,
अब नफ़रत की आँधी में बिखर गए गुलिस्तां ।

लाख कोशिशें की हमने, बदलने चाहे दुनिया के सब रंग,
फिर भी रोक न सके, हम लुप्त होते रंग ।।

नसरीन अली
शाखा क्र. 03,
भोपाल

“माँ भारती, माँ शारदा का वरदान और मधुर गान है राजभाषा हिंदी”

कविवर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की भावपूर्ण पंक्तियां हमारी राजभाषा हिन्दी का महत्व स्वत: स्पष्ट कर देती हैं -

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल ।।

राजभाषा हिंदी विश्व की उन्नत भाषाओं में सबसे सुव्यवस्थित भाषा है। हिंदी आम जनता से जुड़ी भाषा है और आम जनता भी हिंदी से जुडी है, दोनों एक दुसरे के पूरक हैं। हिन्दी हमारी सभ्यता और समृध्द संस्कृति की वाहिका है। जनमानस तक पहुंचने का हिन्दी से बढ़िया कोई भी अन्य माध्यम नहीं है।

हिंदी है बहुत ही सरल,

करनी है हम सबको सार्थक पहल ।
समर्थ व सरल है हिंदी भाषा,
जैसे लिखी वैसे ही बोली जाती है हिंदी भाषा ।
एक सूत्र में बान्धे हम सबको, हिंदी ही है जन-जन की भाषा ।

साहित्य और इतिहास में वाल्मिकि, वेदव्यास, कालिदास, तुलसीदास, कबीर, मीराबाई, रहीम, जायसी, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, मुंशी प्रेमचंद, हरिवंश राय बच्चन, भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी... और अनगिनत साहित्यकारों आदि का हिंदी साहित्य की प्रगति में अतुल्य योगदान रहा तथा इनके जैसी प्रतिभाएं कभी-कभी ही जन्म लेती हैं ।

हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली एवं समझे जाने वाली तीसरी जनप्रिय भाषा है। हिन्दी भाषा में संवाद जितना सरलता से संभव है, उतना अन्य भाषा में कतई नहीं ।

हिन्दी सिनेमा के द्वारा राजभाषा हिन्दी को विश्वस्तर पर सम्मान प्राप्त हो रहा है। हिन्दी सिनेमा भौगोलिक सीमाएं लांघकर विश्वपटल पर वैश्वीकरण और उदारीकरण के इस दौर में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कर रहा है। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ हिन्दी सिनेमा ने हिन्दी भाषा के समृध्द साहित्य का परिचय पूरे विश्व को करवाया है। हमारे देश में हिन्दी के समाचार पत्र और पत्रिकाएं सबसे ज्यादा छपते, बिकते और पढ़े जाते हैं । हिन्दी बहुत ही सरल और सहज है तथा इसका शब्दकोष, व्याकरण बहुत ही समृध्द है । कई प्रसिध्द फिल्मकारों ने इस दिशा में बेहद सराहनीय कार्य किया है। हिन्दी उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की कालजयी रचनाओं - गोदान, गबन, सद्गति, शतरंज के खिलाडी आदि पर बेहतरीन फिल्में तथा दूरदर्शन मालिकाएं बनीं। इसी तरह हिन्दी के अन्य दिग्गज रचनाकारों सर्वश्री धर्मवीर भारती, कमलेश्वर, मोहन राकेश और चेतन भगत आदि की अमूल्य रचनाओं को दादा साहब फाल्के, व्ही.शांताराम, गुरूदत्त, बिमल राय, राजकपूर, सत्यजीत रे, दीपा मेहता, आर. बाल्कि, विधु विनोद चोपडा, नागराज मंजुले, छावा दिग्दर्शक लक्ष्मण उतेकर आदि फिल्मकारों की फिल्में आलम-आरा से लेकर सितारे जमीन पर तक और उनकी टीम के कई प्रसिध्द, अभिनेता-अभिनेत्रियों एवं गीतकारों-गायकों-संगीतकारों-दिग्दर्शकों ने भी हिन्दी भाषी फिल्मों को देश-विदेश के फिल्म प्रेमियों तक पहुंचाने में विश्व पटल पर हिन्दी के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

गीत-संगीत मनुष्य की विश्वव्यापी भाषा है। हिन्दी फिल्मों के गीतों ने भी हिन्दी भाषा की लोकप्रियता में बेतहाशा वृध्दि की है। हिन्दी फिल्मों के गीत-संगीत, चाहे राष्ट्रीय पर्व-स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस समारोह, सामाजिक पर्व-दिवाली, होली, दशहरा-मिलन, रक्षाबन्धन, विवाह और जन्मदिन समारोह, साथ ही चुनाव, प्रचार-प्रसार आदि में भरपूर प्रयोग किया जाता है। हिन्दी फिल्मों ने हमारी अलमारियों में बंद पड़े साहित्य को जन-जन तक पहुंचाकर उसकी बेहतर सेवा की है। नये उभरते फिल्मकारों को हिन्दी भाषा के समृध्द साहित्य से हिन्दी फिल्मों के निर्माण की संभावनाओं को खोजना चाहिए जिससे हिन्दी भाषी फिल्मों को देश-विदेश के फिल्म प्रेमियों तक पहुंचाने में विश्व पटल पर हिन्दी के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह हो ।

हिंदी भाषा को दुनिया के लगभग 175 देशों में किसी-न-किसी रूप में पढ़ाया या सीखा जाता है।

विश्व के कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों और संस्थानों ने अपने पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा को शामिल किया है। आज दुनिया भर में लगभग 300 से अधिक ऐसे विश्वविद्यालय हैं, जहाँ हिंदी भाषा और साहित्य पर शोध, स्नातक और परास्नातक स्तर तक अध्ययन कराया जाता है। इस प्रकार, हिंदी अब एक वैश्विक भाषा का रूप ले चुकी है ।

इंटरनेट व सोशल मिडिया पर हिन्दी का प्रयोग करने वालों की संख्या में बेतहाशा वृध्दि हुई है। राष्ट्राध्यक्षों द्वारा विश्व मंच पर हिन्दी में भाषण दिए जा रहे हैं।

चौदह सितंबर हमारा हिंदी दिवस है,
राष्ट्रीय भावना से संपूर्ण वातावरण सरस है ।
प्रत्येक देशवासी यह संकल्प कर रहा है,
राजभाषा की उन्नति हो यह संबल उभर रहा है ।
14 सितम्बर 1949 को हिंदी बनी हमारी राजभाषा,
विगत 76 वर्षों में बहुत फली-फूली हमारी प्रिय हिंदी राजभाषा ।
विगत 7 दशकों से हिंदी का दीप है सतत प्रज्ज्वलित,
राजभाषा हिंदी की उन्नति में ही है
हम सब भारतीय का हित निहित ।।

"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है" - महात्मा गांधी ।

दिनांक 29.03.1918 को इंदौर (मध्यप्रदेश) में आयोजित अष्टम साहित्य सम्मेलन के मंच से राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का शंखनाद किया था। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के ऐतिहासिक 107 वर्ष पूर्ण हुए हैं। म. गांधीजी 20 अप्रैल सन् 1935 को हिंदी साहित्य समिति इंदौर (मध्यप्रदेश) में शिलान्यास के लिए आए थे, जहाँ पर वे 23 अप्रैल तक ठहरे थे । इस अवधि में 24 वां हिंदी साहित्य सम्मेलन हुआ था, जिसमें गांधीजी सभापति थे । इंदौर में उस समय के बिस्को पार्क (वर्तमान नेहरू पार्क) में आयोजित सम्मेलन में म. गांधीजी ने राष्ट्रभाषा रूप में हिंदी की पैरवी की थी । म. गांधी की अध्यक्षता में आयोजित हिंदी साहित्य सम्मेलन में राष्ट्र भाषा साहित्य बोर्ड की स्थापना का विचार प्रस्तुत किया गया था ।

हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में हमारी संसद द्वारा 14 सितंबर 1949 को संवैधानिक दर्जा मिला, किंतु इसकी प्रभावी भूमिका स्वतंत्रता आन्दोलन में ही बन गई थी ।

हिन्दी कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में 1918 से 1936 तक के कालखंड को 'प्रेमचंद युग' कहा जाता है। मुंशी प्रेमचंद हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक थे। उन्होंने सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास तथा कफन, पूस की रात, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, दो बैलों की कथा आदि तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं। उनमें से अधिकांश हिंदी में प्रकाशित हुईं। उन्होंने अपने दौर की सभी प्रमुख हिन्दी पत्रिकाओं जमाना, सरस्वती, माधुरी, मर्यादा, चाँद, सुधा आदि में लिखा। उन्होंने हिंदी समाचार पत्र जागरण तथा साहित्यिक पत्रिका हंस का संपादन और प्रकाशन भी किया। इसके लिए उन्होंने सरस्वती प्रेस खरीदा। 1906 से 1936 के बीच लिखा गया प्रेमचंद का साहित्य इन तीस वर्षों का सामाजिक सांस्कृतिक दस्तावेज है। इसमें उस दौर के समाजसुधार आंदोलनों, स्वाधीनता संग्राम तथा प्रगतिवादी आंदोलनों के सामाजिक प्रभावों का स्पष्ट चित्रण है। उनमें दहेज, अनमेल विवाह, पराधीनता, लगान, छूआछूत, जाति भेद, विधवा विवाह, आधुनिकता, स्त्री-पुरुष समानता, आदि उस दौर की सभी प्रमुख समस्याओं का चित्रण मिलता है। जीवन के अंतिम दिनों तक वे साहित्य सृजन में लगे रहे।

म. गांधी और कन्हैयालाल मुंशी का विचार था कि एक अखिल भारतीय अंतरप्रांतीय साहित्य-परिषद की स्थापना की जाय तथा हिंदी भाषा के माध्यम से विभिन्न प्रांतीय भाषाओं के साहित्य को किसी पत्रिका के द्वारा प्रकाशित किया जाए। इसी तारतम्य में भारतीय साहित्य के मुख पत्र के रूप में 'हंस' पत्रिका का प्रथम अंक अक्तुबर 1935 को प्रकाशित हुआ था, जिसके संपादक अमर साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद

थे । मुंशी प्रेमचंद ने 'हंस' पत्रिका के संपादकीय में ठीक ही लिखा था कि "म. गांधीजी की प्रेरणा से ही सारी योजना बनी थी। म. गांधी ने 'हंस' पत्रिका में एक संदेश दिया था जो कि पत्रिका में सतत प्रकाशित होता रहा, इस संदेश में म. गांधी ने कहा था कि, 'हंस' हिंदुस्तान भर में अनोखा प्रयत्न है, यदि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाना है तो ऐसे मासिक की आवश्यकता है। प्रत्येक प्रांत की भाषा में जो लेख लिखे जाते हैं उनका परिचय राष्ट्रभाषा द्वारा आम जनता को मिलना चाहिए। अंग्रेजों द्वारा हंस पत्रिका में राष्ट्रवाद की गंध के आधार पर इस पत्रिका पर प्रतिबंध की कार्यवाही की। किंतु मुंशी प्रेमचंद द्वारा अंग्रेजो से संघर्ष कर दस हजार की जमानत राशि जमा कर पुनः 'हंस' पत्रिका का प्रकाशन शुरु किया और उन्होंने मृत्यु पर्यंत 'हंस' पत्रिका का प्रकाशन जारी रखा । 8 अक्तुबर 1936 को मुंशी प्रेमचंद का जीवनदीप सदैव के लिए बुझ गया, परंतु हिंदी साहित्य के गौरव उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद, हिंदी जगत को दैदिप्यमान कर गए । मुंशी प्रेमचंद से लेखन की एक सर्वथा मौलिक किंतु सशक्त धारा जन्मी। पाठकों तथा समीक्षकों ने अनुभव किया कि हिंदी साहित्य के क्षेत्र में एक युगांतकारी परिवर्तन आया है।

राजभाषा हिंदी का कोई पर्याय नहीं,
अटल सत्य है यह कोई राय नहीं।
नित करते रहें प्रयोग, तो भाषा रहे जीवंत,
अन्यथा हो जाता है, प्रायः उस भाषा का भी अंत ।

आइए, राजभाषा हिंदी में अपना कामकाज करते समय शब्दों के लिए अटकिए नहीं, साथ ही शैली के लिए भी रूकिए नहीं, वरन् आप हिंदी में अपना कामकाज निःसंकोच करते जाइए, आपकी भाषा सुधरती जाएगी । आपको अब यह भाषा सरल और आसान लगती जाएगी ।

राज्य अनेक, राष्ट्र एक है, कार्य अनेक, संकल्प एक है ।
राहें अनेक, मंजिल एक है, भाषाएं अनेक, हमारी राजभाषा एक है ।
करनी है हमें एक सार्थक पहल;
हिन्दी सुपथ पर नित चल-चला-चल,
हिन्दी को अपनाने से ही होगा देश और हमारा भविष्य उज्ज्वल ।।

विगत 75 वर्षों में हमारे देश और विदेश में राजभाषा हिन्दी में अधिकाधिक कार्य संपन्न किया जा रहा है, राजभाषा हिन्दी का विकास दिन-दूना रात-चौगुना हो रहा है और भविष्य में भी अवश्य होगा, ऐसा मेरा दृढ़विश्वास है । राजभाषा के प्रति जन मानस का अनुराग सतत बढ़ रहा है। गैर-हिंदी भाषी राज्यों में भी कई हिंदी प्रेमी भारतीयों द्वारा देश को एक सूत्र में पिरोने का काम किया जा रहा है, जैसे-चैन्नई के डॉ. पी. आर. वासुदेवन 'शेष' द्वारा हजारों दक्षिण भारतीयों को हिंदी प्रचारकों के रूप में प्रशिक्षित किया गया है और डॉ. पी. के. बालसुब्रमण्यम हिंदी का अलख जगा रहे हैं। ओडिशा राज्य में पले-बढ़े-पढ़े श्री तारिणी प्रसाद महंती द्वारा हिंदी के विकास में निरंतर योगदान दिया जा रहा है । बेशक, हमारी सभी प्रकार की प्रगति का मूलाधार राजभाषा हिंदी ही है।

मां की मीठी लोरी सुन पले, मिला राजभाषा का प्यार,
हिंदी के आंचल में समाया, मां की लोरी का दुलार ।
हमें अपनी "हिन्दी" मातृभाषा पर अभिमान है,
"हिन्दी" हमारी आन, बान, शान है।
राजभाषा हिंदी, भारत माता के भाल की बिंदी,
माँ भारती, माँ शारदा का वरदान और मधुर गान है राजभाषा हिंदी ।
तुलसी, कबीर, मीरा, जायसी, प्रसाद, प्रेमचंद, व अनगिनत
साहित्यकारों की पहचान है हिंदी ।।
जय हिन्द, जय भारती ।।

गजानन भगत
उप प्रबंधक (बैंक एवं वैकल्पिक माध्यम),
मंडल कार्यालय इन्दौर, म.क्षे.

मानव मन : अनंत संभावनाएं एवं प्रश्न - भारतीय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में

भारतीय दर्शन, जिसकी जड़ें वैदिक और उपनिषदिक ज्ञान में गहराई तक फैली हैं, मानव मन को केवल एक मनोवैज्ञानिक तत्व नहीं, बल्कि आत्मा (आत्मन्) के अनुभव की दिशा में एक सेतु मानता है। यह दर्शन मनुष्य के भीतर छिपे रहस्यों को जानने, समझने और उनसे परे जाने का मार्ग दिखाता है। "मानव मन : अनंत संभावनाएं एवं प्रश्न" का विषय जब भारतीय दृष्टिकोण से देखा जाए, तो वह केवल ज्ञान-विज्ञान की बात नहीं करता, बल्कि चेतना, मुक्ति और ब्रह्मज्ञान तक पहुंचने की बात करता है।

मन का स्वरूप: चंचल लेकिन शक्तिशाली

भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं:

"चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद् दृढम्।"

(अर्थ: हे कृष्ण! यह मन बड़ा चंचल, बलशाली और हठीला है।)

मन की चंचलता, उसकी उलझनें और उसकी अपार गति भारतीय मनीषियों के लिए कोई नई बात नहीं रही है। परंतु इसी मन में ऐसी शक्ति भी है, जो आत्मबोध की ओर ले जा सकती है - यदि उसे साधा जाए।

योग और ध्यान की भारतीय परंपरा इस तथ्य पर आधारित है कि मन को एकाग्र करके, उसकी दिशा भीतर की ओर मोड़कर, हम परम सत्य तक पहुँच सकते हैं। पतंजलि के योगसूत्रों में कहा गया है:

"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।"

(योग मन की वृत्तियों का निरोध है।)

इसका तात्पर्य यह है कि जब मन की हलचलों को रोका जाता है, तब आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट होती है। यही वह स्थिति है जहाँ से अनंत संभावनाओं का द्वार खुलता है।

संभावनाएँ: आत्मा का प्रतिबिंब

भारतीय दर्शन में मन को आत्मा का एक उपकरण माना गया है - "अन्तःकरण"। यह चार भागों में विभाजित है: मन (विचार), बुद्धि (निर्णय), चित्त (स्मृति), और अहंकार (स्व-भावना)। जब ये सभी शुद्ध और संतुलित हों, तब मनुष्य अपने भीतर की अद्भुत क्षमता को पहचान सकता है।

उपनिषदों में कहा गया है:

"तत् त्वम् असि।" - "तू वही है (जो ब्रह्म है)।"

यह वाक्य यह बताता है कि मानव केवल सीमित शरीर और मन नहीं है, बल्कि वह ब्रह्म (असीम) का अंश है। अतः उसकी संभावनाएँ भी सीमित नहीं, बल्कि ब्रह्म के समान ही अनंत हैं। इस चेतना तक पहुँचने के लिए मन का शुद्ध और एकाग्र होना आवश्यक है।

प्रश्नः जिज्ञासा से आत्मबोध तक

भारतीय परंपरा में प्रश्न पूछना ज्ञान की शुरुआत माना गया है। चाहे वह नचिकेता का यम से "मृत्यु के रहस्य" के विषय में प्रश्न करना हो, या अर्जुन का कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण से "कर्तव्य और आत्मा" पर प्रश्न करना - हर महान संवाद प्रश्न से प्रारंभ होता है।

प्रश्न केवल बौद्धिक अभ्यास नहीं हैं, वे आत्मा की पुकार हैं। छांदोग्य उपनिषद् में श्वेतकेतु से उसका पिता पूछता है:

"स त्वं तद् एव प्रवदिष्यसि?"

(क्या तू उस ब्रह्म को जानता है जिससे सब उत्पन्न होते हैं?)

यह प्रश्न ज्ञान की यात्रा की नींव रखता है। भारतीय दर्शन में प्रश्न केवल उत्तर पाने के लिए नहीं, आत्म-चिंतन और आत्म-बोध की प्रक्रिया को जन्म देने के लिए होते हैं। जब प्रश्न भीतर से उठता है - "मैं कौन हूँ?" - तब आत्मा उत्तर देने लगती है।

मन का साधनः ध्यान, भक्ति और ज्ञान

भारत की साधना परंपरा तीन मुख्य मार्गों की बात करती है:

1. ज्ञान योग - विचार और विवेक से मन को आत्मा की ओर मोड़ना।
2. भक्ति योग - प्रेम और समर्पण से मन को परम तत्व में विलीन करना।
3. ध्यान योग (राजयोग) - ध्यान से मन की एकाग्रता और आत्मबोध।

इन मार्गों में मन साध्य नहीं, साधन है। यह मन जब "माया" से हटकर "ब्रह्म" में स्थित होता है, तब उसकी सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं।

निष्कर्ष

भारतीय दर्शन में मानव मन को अस्थिर, लेकिन दिव्य संभावनाओं से युक्त माना गया है। उसकी गति जितनी तेज है, उसकी गहराई उतनी ही विशाल है। प्रश्नों से शुरू होकर आत्मज्ञान तक की यात्रा - यही भारतीय मनीषा की परंपरा है। मनुष्य का जीवन केवल भौतिक प्रगति नहीं, बल्कि भीतर की खोज है।

आज जब मानवता बाहरी उन्नति में लिप्त होकर अशांत हो रही है, तब भारतीय दर्शन का यह संदेश अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है:

"अपने मन को जानो, उसे साधो - तभी तुम स्वयं को जान पाओगे, और ब्रह्मांड तुम्हारे भीतर प्रकट हो जाएगा।"

हेमन्त कुमार

प्रशासनिक अधिकारी (का.एवं औ.सं.),

मंडल कार्यालय, उदयपुर

पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं का योगदान

कार्ल मार्क्स का कथन है 'कोई भी बड़ा सामाजिक परिवर्तन महिलाओं के बिना नहीं हो सकता है।' उक्त कथन शत प्रतिशत सत्य है। इतिहास गवाह है। हमारे देश में चाहे स्वतंत्रता आंदोलन हो या बाल-विवाह कुप्रथा या सती प्रथा अथवा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में स्त्रियों की भूमिका सदैव अग्रणी रही है । महिलाओं ने पर्यावरण संरक्षण में अहम भूमिका निभाई है और वर्तमान में भी निभा रही हैं। महिलाओं ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में नई चेतना का उत्सर्जन किया है। पर्यावरण की रक्षा के लिए महिलाओं द्वारा किए अलग-अलग आंदोलनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि जो काम पुरुष नहीं कर सकते उन्हें महिलाएं बखूबी कर सकती हैं।

यदि हम अपनी संस्कृति, सामाजिक प्रथाओं और रीति रिवाजों को देखें, तो साफ झलकता है कि प्राचीन काल से ही महिलाएं किसी न किसी तरह से पर्यावरण से जुड़ी हुई हैं। भारत में महिलाओं ने पर्यावरण के प्रति मनुष्य के लगाव को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया है। आज भी महिलाओं की दिनचर्या पर गौर करें, तो वे अपना ज्यादा समय पर्यावरण के करीब बिताती हैं। महिलाएं व्रत-त्यौहार के अवसर पर, प्रतिदिन के कामकाज में, पूजा-अर्चना में अनेक वृक्षों का संरक्षण करती है। जैसे- तुलसी, पीपल, नीम, आंवला, अशोक, केला आदि वृक्षों की देखभाल तो महिलाएं रीति-रिवाज के तौर पर पीढ़ी दर पीढ़ी करती आ रही हैं। पर्यावरण संरक्षण के इतिहास पर नजर डाली जाए तो ऐसी बहुत सी महिलाएं हैं, जिन्होंने इस क्षेत्र में नेतृत्व कर प्रकृति को बचाया है। चिपको आन्दोलन, नर्मदा बचाओ आंदोलन, खेजड़ली आंदोलन वे आंदोलन हैं, जिनमें महिलाओं ने पर्यावरण संरक्षण के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिये थे।

खेजड़ली आंदोलन

वर्ष 1730 में जोधपुर के महाराजा को अपना महल बनाने के लिए जब लकड़ी की ज़रूरत हुई, तो सिपाही कुल्हाड़ी लेकर खेजड़ली गांव में पहुंच गए। उसी गांव की महिला अमृता देवी ने इसका विरोध किया ताकि वो पेड़ों को काटने से बचा सकें। लेकिन परिस्थिति ने गंभीर रूप ले लिया था। इस संघर्ष में अमृता बिश्नोई ने पेड़ों को काटने से बचाने के लिए अपनी तीन बेटियों के साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए अपने जीवन की आहुति दे दी थी। 12 सितंबर 1730 में अमृता बिश्नोई सहित 363 बिश्नोई खेजड़ी पेड़ों को बचाने के लिए खेजड़ली में शहीद हो गए थे।

चिपको आंदोलन

चिपको आंदोलन पेड़ों को बचाने का एक ऐतिहासिक और नायाब संघर्ष है। इस आंदोलन की मुख्य संचालक महिलाएं ही थीं। गौरा देवी इस आंदोलन की प्रमुख महिला थीं जिन्हें 'चिपको आंदोलन की जननी' और 'चिपको वुमन' भी कहा जाता है। चिपको आंदोलन तत्कालीन उत्तर प्रदेश के चमोली जिले में हुआ था। चिपको आंदोलन पेड़ों की कटाई रोकने और उन पर आश्रित लोगों के वनाधिकारों की रक्षा के लिए किया जाने वाला आंदोलन था। । मार्च 1974 में रैणी गांव के 2500 पेड़ों को काटने के सरकारी आदेश को रोकने के लिए वहां की महिलाओं ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। जब वन विभाग और सरकारी ठेकेदार पेड़ों को काटने के लिए आगे बढ़ रहे थे, तब गौरा देवी के नेतृत्व में रैणी गांव की महिलाएं अपने प्राणों की परवाह किए बगैर पेड़ों से चिपक कर खड़ी हो गई थी। गांव की महिलाओं के मजबूत इरादों को देखकर सरकारी टीम को वापिस लौटना पड़ा था। गौरा देवी के नेतृत्व में चमोली गांव की महिलाओं ने पेड़ काटने आए लोगों को यह कहकर भगा दिया था कि 'जंगल हमारा मायका है।'

नर्मदा बचाओ आंदोलन

मेधा पाटकर ने इस आंदोलन में सक्रिय मुख्य भूमिका निभाई है। भारत में नदियों को जोड़ने की नीति और विस्थापित लोगों के अधिकारों के सवाल पर मेधा पाटकर ने लंबा उपवास तक रखा है। आंदोलनों में हिस्सा लेने के दौरान मेधा पाटकर को जेल तक भी जाना पड़ा है। इसके बावजूद उन्होंने अपने हौसलों को कम नहीं होने दिया। मेधा पाटकर लगातार पर्यावरण की सुरक्षा में अपना योगदान दे रही हैं। वह वर्तमान में भारत की प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता हैं। जिसके लिए इन्हें अंतर्राष्ट्रीय 'ग्रीन रिबन' पर्यावरण पुरस्कार से नवाजा गया। इसके अलावा भी इन्हें कई स्वदेशी पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है।

महिलाओं का प्रकृति के प्रति प्रेम समय के साथ बढ़ता दिखाई देता है। वह पर्यावरण की रक्षा के लिए आज भी उतनी ही अधिक जागरूक हैं। वर्तमान में 2024 में पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त महिला चामा मुर्मू जो की झारखंड की रहेने वाली हैं, उन्होंने 3 मिलियन पेड़ लगाए तथा 30,000 महिलाओं को सशक्त किया। दक्षिण अंडमान की के.चेल्लमल ने जैविक नारियल की खेती कर ख्याति प्राप्त की उन्हें 2024 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पारबती बरुआ को पशुकल्याण के लिए पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया । नारी के इस योगदान पर यह कहना श्रेष्ठ होगा:

रसोई हो या अंतरिक्ष की उड़ान
जीवन के हर पहलू पर विशिष्ट है स्थान
स्वच्छता अभियान हो या पर्यावरण सुरक्षा की बात
नारी का हर क्षेत्र में है अमिट योगदान ।

इन्द्रप्रीत गुलाटी
से.नि. सहायक सचिव (राजभाषा), केन्द्रीय कार्यालय

मेरा अमेरिका दौरा

कई लोगों का अमेरिका जाना सपना होता है, खासकर युवाओं का! संयुक्त राज्य अमेरिका, दुनिया की महाशक्तियों में से एक है। शुरुआती दिनों में देश के इतिहास के बारे में पढ़ा और गगनचुंबी इमारतों के रूप में आधुनिकता के साथ मिलकर इसे और अधिक मनोरंजक और दिलचस्प बना दिया। इस देश में पर्यटकों के बढ़ने का एक और कारण यह है कि देश के विभिन्न हिस्सों में साल भर अलग-अलग मौसम रहता है। संयुक्त राज्य अमेरिका का भूगोल पश्चिम में पहाड़ों, एक विस्तृत केंद्रीय मैदान और पूर्व में कम ऊंचाई वाले पहाड़ों के साथ विविध है। 2018 में जब मेरे बेटे ने अमेरिका के इंडियाना के Purdue विश्वविद्यालय में अपनी मास्टर्स की पढ़ाई करने का फैसला किया, तभी हमने अमेरिकी भूगोल का अध्ययन करना शुरू किया।

आवश्यक दस्तावेजीकरण प्रक्रिया शुरू हुई और उसने अपने दोस्तों के साथ विभिन्न औपचारिकताएं पूरी कीं और उड़ान भरने के लिए तैयार हो गया। आखिरकार, 15 अगस्त 2021 को सभी लड़के दिल्ली से शिकागो के लिए रवाना हुए। साथ ही, हमने यूएस वीज़ा दाखिल करने की अपनी प्रक्रिया भी शुरू कर दी। VISA अस्वीकृति, यात्रा की उच्च लागत और यात्रा के लंबे घंटों जैसे विभिन्न कारणों से अमेरिका की यात्रा की योजना बनाना एक कठिण कार्य हो सकता है। COVID के कारण, यूएस वीज़ा जारी करने में काफी देरी हुई, लेकिन बहुत प्रयासों के साथ, अंततः 1 नवंबर 2022 को हमारे यूएस वीज़ा पर मुहर लग गई। सभी माता-पिता अब दीक्षांत समारोह में भाग लेने, यूएस यात्रा के बारे में जानकारी एकत्र करने आदि के लिए अपनी यात्रा की योजना बनाने लगे। अमेरिका जाने के लिए बहुत उत्साह था और अमेरिका में सभी लड़के भी अपने माता-पिता की यात्रा का इंतजार कर रहे थे और उन्होंने यूएसए में विभिन्न स्थानों की हमारी यात्रा की योजना बनाना शुरू कर दिया था। आखिरकार हम 14 मई 2023 को पर्ड्यू विश्वविद्यालय में अपने बेटे के दीक्षांत समारोह में भाग लेने के लिए 9 मई 2023 को अमेरिका के लिए रवाना हुए। हम 10 मई 2023 को शिकागो पहुंचे और हमारी सबसे रोमांचक यात्रा शुरू हुई। मेरा बेटा हमें शिकागो हवाई अड्डे पर लेने आया और हमने अमेरिका की खोज शुरू कर दी। अमेरिका कई मायनों में हमारे देश से बहुत अलग है। यह भारत की तरह खूबसूरत है, लेकिन ज़्यादा संगठित और अनुशासित है। लोग नियमों का पालन कर रहे थे और ट्रैफ़िक जाम के बावजूद, सभी वाहन अनुशासित तरीके से चल रहे थे। मेरा बेटा एक पेट्रोल पंप पर रुका और हमने देखा कि यात्री खुद ही पेट्रोल या डीज़ल भरवा रहे थे और कोई उनकी मदद करने वाला नहीं था, यह एक अनोखा अनुभव था।

हम West Lafyette पहुँचे, जो Purdue यूनिवर्सिटी का घर है। Home of Purdue एक छोटा सा शहर, जो Purdue यूनिवर्सिटी के सभी छात्रों की ज़रूरतों को पूरा करता है, जो यूएसए के प्रसिद्ध सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में से एक है और वर्तमान में यूएसए का चौथा सबसे अच्छा सार्वजनिक विश्वविद्यालय है। West Lafyette और Lafyette दो खूबसूरत शहर हैं, जिनमें शायद ही कोई ऊँची इमारत हो और एक ग्रामीण क्षेत्र है। 14 मई 2023 को, यह एक भव्य कार्यक्रम था, यानी शाम को दीक्षांत समारोह, जहाँ कई पीएचडी और स्नातकोत्तर छात्रों को डिग्री प्रदान की गई। समारोह लगभग 3 घंटे से ज़्यादा चला। यह व्यक्तिगत रूप से देखने लायक कार्यक्रम था। हम वहाँ होने के लिए भाग्यशाली थे!

इंडियानापोलिस: दीक्षांत समारोह के बाद, हम आराम कर रहे थे और दर्शनीय स्थलों की यात्रा शुरू की। पहला शहर जो हमने देखा वह इंडियानापोलिस था, जिसे आम बोलचाल की भाषा में इंडी के नाम से जाना जाता है। यह अमेरिका के इंडियाना राज्य की राजधानी और सबसे अधिक आबादी वाला शहर है। विश्व प्रसिद्ध संग्रहालयों से लेकर विस्मयकारी राज्य पार्कों तक, इंडियाना में ऐसे शहर हैं जो प्रकृति प्रेमियों, खेल प्रेमियों, भोजन प्रेमियों और इतिहास प्रेमियों को आकर्षित करते हैं।

शिकागो: हमारी अगली यात्रा शिकागो की थी, जिसे व्यापक रूप से "windy city" के रूप में जाना जाता है। शिकागो अपनी अद्भुत वास्तुकला, जीवंत संगीत दृश्य और अद्भुत भोजन के लिए जाना जाता है। भोजन, फैशन और मौज-मस्ती के लिए शहर का केंद्र बिंदु विश्व प्रसिद्ध Magnificent Mile है। बचपन में मैंने 1893 में विश्व धर्म संसद के प्रतिनिधि के रूप में स्वामी विवेकानंदजी की शिकागो यात्रा और शिकागो के आर्ट इंस्टीट्यूट में उनके प्रसिद्ध भाषण के

बारे में पढ़ा था। हमें इमारत को बाहर से देखने का सौभाग्य मिला, जो अमेरिकी दौरे के सबसे शानदार क्षणों में से एक था। एक अन्य प्रमुख पर्यटक आकर्षण नेवी पियर है, जिसे मूल रूप से 1916 में एक मनोरंजन क्षेत्र और शिपिंग सुविधा के रूप में खोला गया था, लेकिन अब यह शिकागो के सबसे लोकप्रिय पर्यटक आकर्षणों में से एक है। आज, नेवी पियर 50 एकड़ के बगीचों, आकर्षणों, दुकानों, संगीत समारोह स्थलों और पार्कों से बना है। नेवी पियर पार्क में 150-फुट का सेंटेनियल व्हील है। हमने मिशिगन झील में एक छोटी नाव की सवारी की, जिसमें शहर की विभिन्न इमारतों और इतिहास के बारे में जानकारी दी गई।

नायगारा: मेरे बेटे और भतीजी ने यूएसए के सबसे बेहतरीन स्थलों में से एक नायगारा फॉल्स की यात्रा की योजना बनाई थी। हम West Lafyette से नायगारा तक कार से गए जो 600 मील से भी ज़्यादा दूर है। अमेरिका में आप चौड़ी सड़कों, आधारभूत संरचना और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नियमों का पालन करने वाले नागरिकों (कार चलाते समय) की वजह से एक दिन में 300 मील से भी ज़्यादा की यात्रा आसानी से कर सकते हैं। अमेरिका में ट्रैफ़िक जाम होते हैं, लेकिन उन्हें व्यवस्थित तरीके से प्रबंधन किया जाता है। हम समय-समय पर विश्राम लेकर लगभग 12 घंटे में 600 मील (लगभग 1000 किलोमीटर) से भी ज़्यादा की यात्रा पूरी कर पाए। West Lafyette से नायगारा के रास्ते में हमने इंडियाना, ओहियो, पेनसिल्वेनिया जैसे कई राज्यों को पार किया और न्यूयॉर्क राज्यमें प्रवेश किया। हमने रास्ते में लेक एरी (Lake Eri), फोर्ट एरी (Fort Eri) और कई शहरों जैसी कुछ खूबसूरत जगहें देखीं।

हमारा आवास नायगारा फॉल्स के पास खूबसूरत Airbnb में हुआ। अगले दिन हम नायगारा गए, 'Maid Of The Mist' राइड का मज़ा लिया। दोपहर के भोजन के बाद मैं मेरी पत्नी के साथ रेनबो ब्रिज के ज़रिए कनाडा की ओर पैदल चल पड़ा। कनाडा की तरफ से नायगारा फॉल का नजारा बिल्कुल मनमोहक है। कनाडा की तरफ जाने के लिए, आपको कनाडा का वीज़ा (अमेरिकी नागरिक के अलावा अन्य के लिए) चाहिए और अगर आप कार से जा रहे हैं तो $5 टोल देना होगा और पैदल चलने वालों के लिए $1 टोल देना होगा। कनाडा के नायगारा की तरफ घूमने के लिए 'WEGO' बस सेवाओं की बहुत अच्छी व्यवस्था है। 'WEGO' 24 घंटे की यात्रा के लिए $12 का शुल्क लेती है। हम कनाडा की तरफ से भी खूबसूरत नज़ारे और वीडियो ले पाए और शाम तक वापस अमेरिका की तरफ आ गए। रात में नायगारा फॉल्स पर लाइटिंग और आतिशबाजी होती है, जो देखने लायक होती है। अगले दिन हमने लेक ओंटारियो (Lake Ontario) और फोर्ट ओंटारियो (Fort Ontario) का दौरा किया जो भी शानदार है। नायगारा ने मेरे दिल को छू लिया और मैं एक बार फिर वहां जाने का इरादा रखता हूं।

शानदार नायगारा से हम अमेरिका के बड़े शहरों की ओर बढ़े। हम न्यू जर्सी के लिए रवाना हुए। रास्ते में हमने कॉर्निंग ग्लास म्यूजियम(Corning Glass Museum), रोचेस्टर शहर आदि का दौरा किया। अगले दिन न्यू जर्सी से हमने न्यूयॉर्क शहर की खोज शुरू की।

न्यूयॉर्क शहर: न्यूयॉर्क अमेरिका की वित्तीय राजधानी या दुनिया की वित्तीय राजधानी के रूप में कहा जा सकता है। मेरे शहर मुंबई से, जो भारत की वित्तीय राजधानी है, दुनिया की वित्तीय राजधानी में जाना एक सपने जैसा था। पहले दिन हमने न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज (New York Stock Exchange), वॉल स्ट्रीट (Wall Street), वर्ल्ड ट्रेड सेंटर बिल्डिंग (W.T.C.), 9/11 मेमोरियल, ब्रुकलिन ब्रिज, मैनहट्टन ब्रिज, एम्पायर स्टेट बिल्डिंग और प्रसिद्ध टाइम्स स्क्वायर जैसी जगहों का दौरा किया। ऐसा कहा जाता है कि न्यूयॉर्क शहर एक ऐसा शहर है, जो कभी नहीं सोता है और टाइम्स स्क्वायर (Times Square) पर यह और भी स्पष्ट है। न्यूयॉर्क शहर में एक और उल्लेखनीय जगह 9/11 मेमोरियल थी। इंडियानापोलिस में हमने इसी तरह का लेकिन छोटा स्मारक देखा। मुझे इन स्मारकों पर 'कभी न भूलें' (Never forget) की टैगलाइन भी पसंद है। कहीं-कहीं इसका विस्तार 'कभी न भूलें, कभी माफ़ न करें' (Never forgive, never forget)के रूप में भी देखा गया। मुझे लगा कि मेरे शहर मुंबई में भी कुछ ऐसा ही होना चाहिए क्योंकि मुंबई एक से ज़्यादा मौकों पर आतंकवाद का शिकार रही है। अगले दिन हमने स्टैच्यू ऑफ़ लिबर्टी (Statue of Liberty), रूजवेल्ट आइलैंड ट्रामवे (Rosvelt Island Tramway), ग्रैंड सेंट्रल टर्मिनल (Grand Central Terminal) का दौरा किया। न्यूयॉर्क शहर में ज़्यादातर जगहों पर ट्रेन से जाया जा सकता था और यह शहर को अच्छे से देखने का (Explore करने का) सबसे अच्छा तरीका था। न्यूयॉर्क शहर के कुछ हिस्सों में मुझे

मुंबई की झलक मिली। यह कुछ हद तक नरीमन पॉइंट या फोर्ट जैसा लगा। न्यूयॉर्क शहर दुनिया का तीसरा ऐसा शहर है जहाँ सबसे ज़्यादा गगनचुंबी इमारतें हैं और मेरा शहर मुंबई दुनिया का 17वाँ ऐसा शहर है जहाँ सबसे ज़्यादा गगनचुंबी इमारतें हैं।

न्यू जर्सी: ख़ास तौर पर भारतीयों के लिए रहने के लिए एक अच्छी जगह हैं। न्यू जर्सी में हम भारतीय खाने के लिए इंडियन स्ट्रीट गए और वहाँ कई भारतीय मिले, अमेरिका का छोटा गुजरात देखा। न्यू जर्सी से हम फ्लाइट से West Lafyette, Indiana वापस आए क्योंकि मेरे बेटे का इंटरव्यू ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन में तय था और वह अपनी कार से वहाँ गया था।

अब इंडियाना में हम इंडियानापोलिस के आस-पास की जगहों पर गए, Beasley's Orchard, Danville में स्ट्रॉबेरी चुनने के लिए, West Lafyette में कुछ खूबसूरत झीलें, Purdue यूनिवर्सिटी कैंपस, इंडियानापोलिस स्थित मन्दिर, आदि। दौरे के दौरान हमने वॉलमार्ट, सैम्स क्लब, कॉस्टको, टारगेट आदि जैसे यूएसए के सभी प्रसिद्ध शॉपिंग स्थानों का दौरा किया। हमने डीक्यू (DQ), फाइव गाईज (Five guys), कल्वर्स (Culver's) आदि में विभिन्न प्रकार की आइसक्रीम का आनंद लिया और Chipotle, स्टारबक्स आदि जैसे खाने-पीने के कुछ अच्छे स्थानों का आनंद लिया।

हालाँकि अमेरिका इतने सालों से मेरा ड्रीम डेस्टिनेशन कभी भी नहीं रहा है, लेकिन यह एक ड्रीम सफर था। अमेरिका इतना बड़ा देश है कि कोई भी एक यात्रा में पूरे देश को नहीं देख सकता। इस यात्रा के दौरान हमने इस विशाल देश के 'मध्य-पश्चिम' (Mid-west) के एक हिस्से का पता लगाया। मैं निश्चित रूप से इस विश्व की महाशक्ति के अन्य राज्यों की खोज के लिए कई यात्राएँ करने के लिए उत्सुक हूँ।

अजय श. कुलकर्णी
सहायक सचिव (मा.सं.वि.एवं प्रशिक्षण)
केंद्रीय कार्यालय

"एलआईसी का अभेद रक्षा सूत्र है "योगक्षेमं वहाम्यहम्"

एलआईसी की अभेद सुरक्षा के यह दो हाथ,
हर पल हैं बीमाधारक के साथ ।

वादे से दावे तक-एक रिश्ता भरोसे के साथ,
एलआईसी है, हर पल बीमाधारक के साथ ।

"योगक्षेमं वहाम्यहम्", ध्येय वाक्य सार्थक कर,
एलआईसी की अभेद सुरक्षा पहुंचाएंगे,
हम, हर बीमा योग्य व्यक्ति, हर घर ।

एलआईसी की अभेद सुरक्षा है, हर पल बीमाधारक के पास,
एलआईसी पॉलिसी अवश्य होगी,
हर-घर, हर-बीमा योग्य व्यक्ति के पास ।

69 वर्षों से एलआईसी का सुरक्षा दीपक सतत है प्रज्वलित,
एलआईसी में ही है बीमित जीवन सौ-प्रतिशत सुरक्षित ।

एलआईसी की सभी बीमा योजनाओं में धन संचयन है
लाभप्रद कल, आज और कल,

"जिन्दगी के साथ भी और जिन्दगी के बाद भी"
एलआईसी है बीमित जीवन के साथ हर पल ।

69 वर्षों से बीमाधारक खुशियों को,
एलआईसी सतत रख रही है सुरक्षित,
सत्यनिष्ठा व "ग्राहक देवो भव" शैली से होंगे
बीमाधारकों के सभी उद्देश्य संपूरित ।

सभी सम्माननीय बीमाधारकों के जीवन में
सुरक्षा और सुख-समृद्धि आए,
सभी बीमाधारकों को सुरक्षा और समृद्धि की
हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

एक शरीर, एक मन, एक दिल, एक लक्ष्य-योगक्षेमं वहाम्यहम्
एलआईसी का अभेद रक्षा सूत्र है "योगक्षेमं वहाम्यहम्"।

गजानन भगत
उप प्रबंधक (बैंक एवं वैकल्पिक माध्यम),
मंडल कार्यालय इन्दौर, म.क्षे.

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में नौकरियों का महत्व

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक ऐसी तकनीक है, जिसमें मानव जैसी क्षमता होती है, जो किसी भी समस्या का समाधान कर सके। यह छवियो की पहचान कर सकता है, कविताएँ लिख सकता है और डाटा आधारित भविष्यवाणी कर सकता है। यह एक मशीन इंटेलिजेंस है, जिसका प्रयोग आज कई उद्योग, फैक्ट्री, हॉस्पिटल कर रहे हैं। पहले जिस काम को करीब सौ लोग कर सकते थे, आज ए आई, बिना किसी मदद के, अकेले ही उस काम को कर पाता है। ए आई उन अनुप्रयोगों के लिए एक व्यापक शब्द बन गया है, जो जटिल कार्य करते हैं, जिनके लिए पहले मानवीय इनपुट की आवश्यकता होती थी, जैसे कि ग्राहकों के साथ ऑनलाईन संवाद करना । हम यह कह सकते हैं कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक प्रकार से टेक्नोलॉजी का ही एक अपडेट है।

ए आई को एक गेम चेंजर के रूप में देखा जा सकता है, जो मैनुअल प्रणाली को हटाकर नई प्रणाली को लाया है । यह आज के दौर का एक नया चेहरा है, जो हमारी उत्पादकता और रचनात्मकता को बढ़ावा देगा और टेक्नोलॉजी को उन्नत करेगा।

ऐसी धारणा है कि ए आई आज हमारी नौकरियों के लिए खतरा है। परन्तु यह एक नई तकनीक है, जिसकी सहायता से मानव कर्मचारी अपने अनेकों जटिल कार्य ए आई के द्वारा करवा कर अन्य रचनात्मक और मूल्य वर्धित पहलुओं पर अपना ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। यह एक प्रचलित प्रणाली है, जो स्मार्टफोन,स्मार्ट हॉस्पिटल, बैंक आदि हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा चुकी है।

कहा जा रहा है कि ए आई की वजह से हमारी नौकरियां कम होंगी, बेरोजगारी बढ़ेगी, परन्तु ऐसा कुछ नहीं है, इससे नौकरी के और अवसर आयेंगे। ए आई केवल जटिल कार्य कर सकता है, जिसका इनपुट कंप्यूटर द्वारा दिया गया है, परन्तु यदि इनपुट सही नहीं है, ए आई का परिणाम सही नहीं हो सकता। इसलिए इसका उपयोग मानव केवल अपनी सहायता के लिए कर सकता है । ए आई मानव के जटिल कार्य करके उसे विशेष कार्य पर अपना ध्यान केंद्रित करने का सम्पूर्ण समय प्रदान करता है। मानव कर्मचारी अपनी नौकरी के रचनात्मक और मूल्य वर्धित पहलुओं पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि ए आई हमारी नौकरी के लिए खतरा नहीं, बल्कि एक ऐसा उपकरण है, जो हमारी उत्पादकता और रचनात्मकता को बढ़ाता है।

कहते हैं कि ए आई के आने से बेरोजगारी बढेगी, परंतु ए आई के आने से नौकरी के अवसर भी आएंगे। ए आई आज हर क्षेत्र में अपना योगदान दे रहा है, जैसे अनेकों कम्पनियाँ चाहे सरकारी या प्राइवेट, सभी चैट बॉट जो कि चौबीस घंटे ए आई द्वारा संचालित रहता है, की सहायता लेकर अपने ग्राहकों को उत्तम सेवा प्रदान कर रही हैं। परन्तु ए आई केवल जटिल उत्तर दे सकता है। अगर किसी ग्राहक को विशेष सेवा चाहिए, तब वह कार्य केवल एक एक्जीक्यूटिव ही कर सकता है।

ए आई के साथ व्यक्तिगत उच्च उपचार योजना को सक्षम करके हेल्थ केयर में क्रांति आई है । आज रोबोटिक सर्जरी जो एक समय में केवल एक सपना सा लगता था । परंतु किसी भी मरीज का उपचार करना है उसके लिए एक डॉक्टर और नर्स की ही आवश्यकता है । सिर्फ ए आई उनके उपचार में मदद कर सकता है । ए आई जो काम कर सकता है वह है मेडिकल रिकॉर्ड का कंप्यूटर पर दिए गए डाटा द्वारा रिव्यू करना, उसका संभावित जोखिम देखना, उस जोखिम का परीक्षण करना और उसका सामान्य मेडिकल मार्गदर्शन देना। परन्तु केवल एक डाक्टर ही उस रोगी को सही और सटीक राय दे सकता है। ए आई उस डाक्टर का स्थान नहीं ले सकता ।

ए आई ने विनिर्माण में काफी मदद की है। यह संचालित रोबोटिक विनिर्माण में दोहराए जाने वाले खतरनाक कार्यों को संभाल सकते हैं जैसे वेल्डिंग संयोजन। मानव अपना केंद्र डिजाइनिंग संशोधन में लगा सकता है ।

विज्ञान के क्षेत्र में भी ए आई ने हर क्षेत्र में डाटा का सटीक विश्लेषण करने में वैज्ञानिकों की बहुत सहायता की है । वे एक सामान्य रूप के स्वरुप (रूटीन पैटर्न) या सामान्य आवृति (रूटीन फ्रीक्वेंसी) को पढ़ने के लिए ए आई की मदद लेते हैं। ए आई बाजार के उतार चढाव

भविष्य का बाजार विश्लेषण (फ्यूचर मार्केट एनालिसिस) करके शेयर बाजार के भविष्य के बारे में मार्केट ट्रेंड बता कर लोगों को जागरूक करता है ।

यहाँ तक चुनाव के समय ए आई चुनाव विश्लेषण करता है और सटीक और स्पष्ट राय देता है। लेकिन यह राय कितनी सही होगी और कितनी गलत यह तो समय ही बताता है। मानव विशेषज्ञ भी ए आई की मदद से ही डाटा एनालिसिस (डाटा विश्लेषण) और अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर विश्लेषण करते हैं। इससे हम यह कह सकते हैं कि ए आई हमारी नौकरियों के लिए खतरा नहीं, बल्कि एक मदद है जिससे हम अपनी उत्पादकता एवं उपयोगिता को बढ़ा सकते हैं। जटिल कार्य ए आई संभाल लेते हैं लेकिन मानव उन कार्यों को अपना विशेष योगदान देकर उस कार्य को और बेहतर बना सकता है। इसलिए आज के दौर में ए आई को अपनाना और विभिन्न उद्योगों में नए अवसर और नौकरी के प्रति पैदा करने के लिए इसकी क्षमता का लाभ उठाना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कहते हैं ए आई हमारी नौकरियों पर भारी पड़ेगा, परन्तु भर्ती प्रक्रिया में ए आई का आगमन संगठनों द्वारा उम्मीदवारों की खोज एवं मूल्यांकन, नियुक्ति के तरीके इन सब में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है। ए आई संचालन भर्ती प्रक्रिया में एक नए युग की शुरुआत करता है, जो सही प्रतिभा को जोड़ने में अभूतपूर्व दक्षता और प्रभावशीलता का वादा करता है। पारंपरिक भर्ती प्रक्रिया जो मैनुअल प्रक्रिया से परिष्कृत होती थी, उसमें बहुत समय लगता था और काफी ज्यादा त्रुटियाँ होती थीं, लेकिन आज ए आई की मदद से यह काम हम तेज़ी से और सटीक तरह से कर सकते हैं ।

आज के युग में धीरे-धीरे ऑनलाइन जॉब्स रिक्रूटमेंट ट्रैकिंग सिस्टम आ गया है। इन सबसे नई क्रांति और बेहतर स्वचालित कार्य जिसके लिए पहले एक मैनुअल चेकिंग होती थी। अब जो भी जटिल कार्य है, वह ए आई द्वारा किया जाता है। यह सब विकास उपकरणों में बदलाव और रणनीति में मौलिक बदलाव का एक नया रूप है। सरल नियुक्ति प्रतियोगिता उम्मीदवारों की सहभागिता बढ़ाती है। सटीक मिलान नौकरी का आवेदन करने वालों और पदों के बीच परिवर्तन का तरीका सरल एवं पारदर्शी बनाता है। जिस कार्य को पूर्ण करने में पहले काफी दिन लग जाते थे, ए आई कुछ ही मिनटों में उसे खत्म कर पाता है। इसलिए हम ए आई को अपना साथी ही मान सकते हैं जो हमारा ही काम सरल बना रहा है।

यह नौकरियों में स्क्रीनिंग करके उम्मीदवारों की योग्यता के आधार पर डाटा को उनके अनुभव, शिक्षा, योग्यता, सेवा और उम्मीदवारों को मैच करके योग्य उम्मीदवार को उस नौकरी के लिए चयन करता है। आज हर क्षेत्र में चैट बॉट की सहायता ली जाती है। चैट बॉट अनेक कम्पनियाँ तत्काल समाधान लेने में इस्तेमाल करती हैं और जबकि व्यक्तिगत बातचीत करने के लिए एक्जीक्यूटिव रहते हैं। यदि किसी ग्राहक को कोई परेशानी है तो चैट बॉट उसकी सहायता करता है । उसके बाद एक्जीक्यूटिव उस ग्राहक को उसके प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम रहता है।

कस्टमर को आसानी से 24 घंटे ग्राहक सेवा प्रदान की जाती है, जो कि ए आई की मदद से पुराने आंकलन के आधार पर दी जाती है। नौकरियों के चयन में भी किस नौकरी में किस प्रकार के लोगों का चयन किया जाएगा, कितने प्रतिशत को लिया जाएगा आदि सब ए आई हमें पुराने अनुभव के आधार पर बताता है। इसके अलावा आजकल वीडियो साक्षात्कार विश्लेषण ए आई द्वारा किया जाता है, जिसमें संचालित वीडियो उम्मीदवारों के मौखिक एवं लिखित संचार के हावभाव, एक्सप्रेशन, फेस और बॉडी लैंग्वेज इसके हिसाब से आंकलन करता है ।

ए आई किसी भी उम्मीदवार का निष्पक्ष मूल्यांकन करने, नियुक्ति प्रक्रिया को सुव्यवस्थित बनाने में मदद करता है। उम्मीदवार मिलान में सटीकता, नियमित कार्यों को संचालित करना एवं उम्मीदवार के अनुभव में सुधार, कौशल और अनुभव के आधार पर उम्मीदवारों के का चयन के द्वारा डाटा का संचालन करना और एक सटीक और सुनिश्चित निर्णय लेने में हमारी सहायता करता है । प्रोसेस रिक्रूटमेंट का आसान बनाना एक बहुत बड़ा गेम चेंजर है।

रिमोट हायरिंग प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करना, ए आई प्रणालियों का निरंतर सीखना और उनके अनुकूल बनाना यह सब ए आई ने बहुत सरल बना दिया है । इसके अलावा प्राप्त फीडबैक का मूल्यांकन करना और निष्पक्ष विश्लेषण करना यह सब कार्य ए आई शीघ्र कर

देता है, जिससे हमें अधिक महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है । ए आई रिक्रूटमेंट ड्राइव प्रोसेस करना और कोई भी पैटर्न एक प्रोग्राम के हिसाब से पढ़ना, उसके अंदर ऑटोमेशन का टाइम और उसका फॉलो अप आसान बनाता है ।

आज मशीन काफी कुछ संभाल रही है, जिस काम में हमें बहुत समय लगता था । इससे हमारा काम काफी आसान हो गया है, जिससे हमारी उत्पादनशीलता बढ़ गई है । जो काम कभी हमें सपना जैसा लगता था, आज यह हकीकत है। लेकिन जिस तरह ए आई का उपयोग हमारे जीवन में तेजी से बढ़ रहा है, रोजगार पर इसका प्रभाव हर इंसान की बढ़ती चिंता का कारण है। ए आई मशीन लर्निंग है, प्रोसेसिंग है, रोबोटिक्स है, लेकिन इंसान नहीं है। ए आई उतना ही उत्तर देता है जिसको वह समझता है। अगर डाटा सही है तो सही नतीजा बताएगा। लेकिन अगर डाटा गलत है तो नतीजा गलत बताएगा । इसलिए जो ए आई है वह एक कंप्यूटर है वह इंसान नहीं है। जिस कार्य में नियमित निर्णय लेने की आवश्यकता है, वह ए आई की सहायता से आसानी से हो जाता है। यह कहना गलत है कि ए आई से नौकरियाँ कम होंगी, सिर्फ उनका आकार बदल जाएगा। नए क्षेत्र में नए प्रारूप के रोजगार अवसर जैसे डेटा विश्लेषण, साइबरसिक्योरिटी, डाटा एनालिस्ट और साइबर सुरक्षा में नौकरियाँ बढ़ेंगी। आज आवश्यकता है युवा वर्ग को आगे आकर अपना कौशल विकास करने की, स्वयं को बदलते स्वरुप में उसके अनुकूल बनाने की ।

जैसे-जैसे ए आई का प्रयोग बढता है, कुशल प्रोफेशनल की आवश्यकता पड़ती रहती है। आज नए विचार एवं नए स्त्रोतों की आवश्यकता है, जरूरत है आत्मविश्वास बनाए रखने की । अपना कौशल विकसित करें और अपनी स्किल को अपग्रेड करें। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि ए आई के आने से नौकरियों पर प्रभाव अच्छा और चुनौतीपूर्ण दोनों ही रहेगा। ए आई हमारी उत्पादकता बढ़ाता है। आवश्यकता है अपने आपको समय के अनुकूल बदलने की, अपने आप को अपडेट करने की एवं अपने स्किल्स को अपग्रेड करने की।

हमें याद है जब 1980 में कंप्यूटर की क्रांति आई थी, बहुत बड़ा बदलाव आया था। हर तरफ लोगों का शोर था कि कंप्यूटर के आने से नौकरियाँ खत्म हो जाएँगी। सबकी छुट्टी हो जायेगी । सबसे पहले रेलवे के रिजर्वेशन में कंप्यूटर शुरू किया गया। फिर स्कूल कॉलेज के रिजल्ट कंप्यूटर की मदद से निकाले गए, इसका इतना विरोध प्रदर्शन हुआ। लोग सड़कों पर आ गए। लेकिन आज प्रत्येक कार्यालय के प्रत्येक कर्मचारी का कार्य बिना कंप्यूटर के नहीं होता।

उद्योगपति यह कहते हैं कि ए आई नौकरियों को नहीं समाप्त करेगा अपितु नई नौकरियाँ बनाएगा क्योंकि बदलाव आने वाला है। बस आवश्यकता है कि हम ए आई के साथ मिलकर कैसे काम करेंगे। पुरानी प्रणाली बदल जायेगी और नई प्रणाली आएगी । एक नए युग की शुरुआत होगी । नए संप्रेषण आ जाएंगे। व्यावसायिक लोग नजर आएंगे। ए आई की नई लर्निंग टेक्निक्स, उनकी मशीन लर्निंग में लोग जाएंगे। नए मार्केट के ट्रेंड देखने को मिलेंगे। ज्यादा ट्रेनिंग के अवसर आयेंगे ।

यह एक बहुत बड़ा निर्णायक कदम है। हर दौर में उतार-चढ़ाव आते हैं। आने वाले समय में बहुत बड़ा बदलाव आएगा । आवश्यकता है कि हर युवा अपने आप को अग्रिम करें। अपना अनुभव ले, नई-नई चीजें सीखे एवं सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट सीखें। आने वाले समय में लोग क्लाउड कंप्यूटिंग, आई ओ टी, क्रिटिकल थिंकिंग करें। आज हर संस्था चाहती है कि वह अपने कर्मचारियों को ए आई की ट्रेनिंग दे, डाटा एनालिसिस की ट्रेनिंग दे ।

भविष्य में रोजगार के लिए आवश्यकता है, खुद पर विश्वास रखने की और खुद को बदलने की, खुद को अपडेट करने की। हम यह नही कह सकते कि रोजगार नहीं होंगे, लेकिन अब अलग तरह से रोजगार होंगे । अब आने वाले समय में युवा वर्ग को आगे आना होगा और इस आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद लेकर एक नए युग की शुरुआत करनी होगी। एक ऐसे युग का आरंभ होगा, जिसमें हमारा देश विकसित भारत कहलाएगा। हमें आज ए आई के साथ अपने आप को ढालना होगा और उसके साथ चलना होगा ।

रिम्मी आनंद
प्रशासनिक अधिकारी
वित्त एवं लेखा विभाग
उ.क्षे.का., नई दिल्ली

भारतीय बीमा उद्योग: चुनौतियों का सामना और नवाचार का अमृत

भारत, एक विशाल और तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्था के रूप में, बीमा क्षेत्र के लिए असीम संभावनाएं समेटे हुए है। जहाँ एक ओर यहाँ एक अरब से अधिक लोगों की वित्तीय सुरक्षा की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर भारतीय बीमा उद्योग कई जटिल चुनौतियों से जूझ रहा है। इन बाधाओं को पार करना और नवाचार की शक्ति को अपनाना ही इस उद्योग के भविष्य को परिभाषित करेगा, इसे केवल जीवित रहने में ही नहीं, बल्कि फलने-फूलने में भी मदद करेगा।

भारतीय बीमा उद्योग के समक्ष प्रमुख खतरे और बाधाएँ:

भारतीय बीमा बाजार की अनूठी प्रकृति कुछ विशिष्ट खतरों को जन्म देती है, जिन्हें समझना और संबोधित करना आवश्यक है:

1. **कम बीमा पैंठ और जागरूकता की कमी:** भारत में बीमा की पैंठ वैश्विक औसत से काफी कम है। इसका एक मुख्य कारण बीमा उत्पादों और उनके लाभों के बारे में जागरूकता का अभाव है। ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में, लोग अभी भी पारंपरिक बचत के तरीकों, जैसे सोना या अचल संपत्ति, को अधिक सुरक्षित और फायदेमंद मानते हैं। बीमा को अक्सर एक जटिल वित्तीय उत्पाद के बजाय केवल एक 'खर्च' के रूप में देखा जाता है, जो इसकी स्वीकार्यता में बाधा डालता है।
2. **विश्वास की कमी और गलत बिक्री के मुद्दे:** अतीत में कुछ गलत बिक्री की घटनाओं और दावा निपटान में देरी या अस्वीकृति ने ग्राहकों के बीच अविश्वास पैदा किया है। यह अविश्वास आज भी कई संभावित ग्राहकों को बीमा खरीदने से रोकता है। पारदर्शिता की कमी और बीमा की शर्तों की जटिल भाषा भी इस अविश्वास को बढ़ाती है।
3. **उत्पाद नवाचार का अभाव और एकरूपता:** बाजार में उपलब्ध अधिकांश बीमा उत्पाद अक्सर एक जैसे दिखते हैं, जिससे ग्राहकों को चुनाव करने में कठिनाई होती है। उपभोक्ताओं की बदलती जरूरतों, जीवनशैली और जोखिम प्रोफाइल के अनुसार अनुकूलित और लचीले उत्पादों की कमी महसूस होती है। उदाहरण के लिए, गिग इकोनॉमी में काम करने वाले लोगों या छोटे व्यवसायों के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए उत्पादों की अभी भी कमी है।
4. **जटिल प्रक्रियाएँ और भारी कागजी कार्रवाई:** बीमा खरीदने से लेकर दावा दायर करने और उसके निपटान तक की पूरी प्रक्रिया अक्सर बोझिल और कागजी कार्रवाई से भरी होती है। यह लंबी प्रक्रिया ग्राहकों के लिए निराशाजनक हो सकती है और उन्हें बीमा खरीदने से हतोत्साहित कर सकती है। यह विशेष रूप से उन युवा ग्राहकों के लिए एक बड़ी बाधा है, जो डिजिटल और त्वरित समाधान पसंद करते हैं।
5. **वितरण नेटवर्क की सीमाएँ:** पारंपरिक एजेंट-आधारित वितरण मॉडल अभी भी भारतीय बीमा उद्योग में हावी है। जबकि एजेंट एक व्यक्तिगत स्पर्श प्रदान करते हैं, उनकी पहुँच और दक्षता की अपनी सीमाएँ हैं, खासकर दूरदराज के इलाकों में। डिजिटल पैंठ बढ़ने के बावजूद, एक मजबूत मल्टी-चैनल वितरण रणनीति अभी भी विकसित की जानी बाकी है।
6. **बढ़ती लागत और प्रीमियम का दबाव:** चिकित्सा खर्चों और दावों की बढ़ती आवृत्ति के कारण, बीमा कंपनियों पर प्रीमियम बढ़ाने का दबाव होता है। यह विशेष रूप से स्वास्थ्य बीमा सेगमेंट में देखा जाता है, जहाँ प्रीमियम की बढ़ती लागत कम आय वाले समूहों के लिए इसे कम किफायती बनाती है। कंपनियों के लिए लाभप्रदता और सामर्थ्य के बीच संतुलन बनाना एक चुनौती है।
7. **नियामक और कराधान संबंधी चुनौतियाँ:** नियामक ढांचा, हालांकि ग्राहकों की सुरक्षा के लिए आवश्यक है, कभी-कभी नवाचार और बाजार के विस्तार में बाधा बन सकता है। कराधान नीतियां, जैसे कि कुछ बीमा उत्पादों पर जीएसटी या टीडीएस, ग्राहकों के लिए लागत बढ़ा सकती हैं, जिससे बीमा कम आकर्षक हो जाता है।

नवाचार: जीवित रहने और आगे बढ़ने का अमृत

इन चुनौतियों का सामना करने और एक मजबूत, ग्राहक-केंद्रित बीमा उद्योग बनाने के लिए नवाचार ही कुंजी है। यह केवल नई तकनीकों को अपनाने के बारे में नहीं है, बल्कि मानसिकता में बदलाव और व्यापार करने के नए तरीकों को विकसित करने के बारे में भी है।

1. **डिजिटल परिवर्तन और इंसुरटेक (InsurTech) का उदय :**

- **ऑनलाइन बिक्री और सेवा:** डिजिटल प्लेटफॉर्म और मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से बीमा उत्पादों की खरीद, नवीनीकरण

और दावा निपटान को सरल और सुलभ बनाना। यह ग्राहकों को 24/7 सेवा और बेहतर पारदर्शिता प्रदान करता है।

- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग (ML):** AI जोखिम मूल्यांकन को अधिक सटीक बना सकता है, धोखाधड़ी का पता लगाने में मदद कर सकता है, दावा प्रसंस्करण को स्वचालित कर सकता है, और ग्राहकों को व्यक्तिगत सिफारिशें प्रदान कर सकता है। AI-संचालित चैटबॉट ग्राहकों के सवालों का तुरंत जवाब दे सकते हैं, जिससे मानवी हस्तक्षेप की आवश्यकता कम हो जाती है।
- **बिग डेटा एनालिटिक्स:** ग्राहकों के व्यवहार, जोखिम प्रोफाइल और जरूरतों को समझने के लिए बड़े डेटासेट का विश्लेषण किया जा सकता है। यह कंपनियों को अत्यधिक लक्षित और व्यक्तिगत बीमा उत्पाद बनाने में मदद करता है, जिससे ग्राहकों की संतुष्टि बढ़ती है।
- **ब्लॉकचेन:** यह तकनीक बीमा अनुबंधों और दावा निपटान में अभूतपूर्व पारदर्शिता और सुरक्षा ला सकती है। स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट्स स्वचालित रूप से दावों का निपटान कर सकते हैं जब पूर्व-निर्धारित शर्तें पूरी हो जाती हैं, जिससे धोखाधड़ी कम होती है और प्रक्रिया तेज होती है।

2. उत्पाद नवाचार और वैयक्तिकरण:

- **ऑन-डिमांड बीमा (On-demand Insurance):** यह ग्राहकों को केवल उन अवधियों के लिए बीमा खरीदने की सुविधा देता है जब उन्हें इसकी आवश्यकता होती है, जैसे यात्रा के दौरान, किसी विशेष कार्यक्रम के लिए, या किसी वस्तु के अल्पकालिक उपयोग के लिए। यह ग्राहकों को लचीलापन और लागत-प्रभावशीलता प्रदान करता है।
- **व्यवहार - आधारित बीमा (Behavior - based Insurance):** "पे-एज-यू-ड्राइव" मोटर बीमा या स्वास्थ्य बीमा में पहनने योग्य उपकरणों का उपयोग करके ग्राहकों के व्यवहार के आधार पर प्रीमियम निर्धारित करना। यह सुरक्षित ड्राइविंग या स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहित करता है और ग्राहकों को अपने प्रीमियम पर नियंत्रण रखने का अवसर देता है।

3. ग्राहक अनुभव में सुधार पर ध्यान:

- **सरल प्रक्रियाएँ:** डिजिटल ऑनबोर्डिंग, ई-केवाईसी और सरल दावा फाइलिंग प्रक्रियाएं ग्राहकों के लिए बीमा को अधिक सुलभ बनाती हैं। डिजी-लॉकर (DigiLocker) का उपयोग बीमा पॉलिसियों को डिजिटल रूप से सहेजने और एक्सेस करने में मदद कर सकता है।
- **पारदर्शिता और स्पष्ट संचार:** बीमा कंपनियों को प्रीमियम, नियम और शर्तों, और दावा निपटान प्रक्रियाओं के बारे में पूरी पारदर्शिता सुनिश्चित करनी चाहिए। सरल भाषा में जानकारी प्रदान करना और जटिल बीमा शब्दावली से बचना ग्राहकों का विश्वास बनाने में महत्वपूर्ण है।
- **व्यक्तिगत सहायता:** भले ही डिजिटल समाधान बढ़ रहे हों, ग्राहकों को अभी भी व्यक्तिगत सहायता की आवश्यकता होती है। AI के साथ ही मानव एजेंटों का संयोजन सबसे प्रभावी ग्राहक अनुभव प्रदान कर सकता है।

4. वितरण चैनलों का विस्तार और सहयोग:

- **फिनटेक और बैंकएश्योरेंस के साथ साझेदारी:** फिनटेक कंपनियों और बैंकों के साथ मजबूत साझेदारी नए वितरण मॉडल को जन्म दे सकती है और ग्राहकों तक व्यापक पहुँच प्रदान कर सकती है।
- **प्रत्यक्ष-से-उपभोक्ता (डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर) मॉडल:** ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से सीधे ग्राहकों तक पहुंचना न केवल लागत कम करता है बल्कि कंपनियों को ग्राहकों के साथ सीधा संबंध बनाने में भी मदद करता है।

निष्कर्ष

भारतीय बीमा उद्योग एक परिवर्तनकारी दौर से गुजर रहा है। चुनौतियों का सामना करने के लिए पुरानी सोच को छोड़कर नवाचार को गले लगाना अनिवार्य है। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर, ग्राहक-केंद्रित उत्पादों को विकसित करके और ग्राहक अनुभव को प्राथमिकता देकर, भारतीय बीमा कंपनियाँ न केवल मौजूदा बाधाओं को पार कर सकती हैं, बल्कि एक मजबूत, गतिशील और विश्वसनीय उद्योग के रूप में उभर सकती हैं। यह उद्योग एक ऐसे भविष्य का निर्माण कर सकता है जहाँ वित्तीय सुरक्षा हर भारतीय की पहुँच में हो, जिससे एक अधिक सुरक्षित और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण हो सके। अब समय आ गया है कि उद्योग भविष्य की ओर देखें और नवाचार के अमृत से खुद को सशक्त करें।

रोहित अग्रवाल
शाखा प्रबंधक, सागर 1
जबलपुर मंडल, मध्य क्षेत्र

जीवन बीमा - जीवन का वचन

ज़िंदगी का सफर, है ये अनोखा,
हर पल है नया, हर साँस है मौका।
कभी धूप खिली, कभी बदली है छाई,
कल की क्या खबर, ये किसने पाई?

अनिश्चित है कल, हर मोड़ है अनजाना,
कैसे संभलेगी नैया, ये किसने जाना?
पर चिंता क्यों करें हम आने वाले कल की,
जब सुरक्षा कवच हो, हर मुश्किल हल की।

जीवन बीमा, ये है सच्चा सहारा,
जब समय की आंधी चले, और टूटे किनारा।
आज की कमाई का ये है सच्चा उपयोग,
भविष्य की खुशियों का, ये है अनुपम योग।

छोटी सी क़िस्त, पर फ़ायदे हैं इसके महान,
परिवार की ढाल, ये बनता है हर इंसान।
बच्चों की शिक्षा, उनके सपनों की उड़ान,
शादी की तैयारी, या हो कोई बड़ा अरमान।

हर ज़रूरत पर, ये देता है पूरा साथ,
खुशियों की चाबी, थामे रहता है ये हाथ।
जब न रहें हम, इस दुनिया में प्यारे,
पीछे न छूटे कोई, आँसू बहाकर बेचारे।

उनकी राहें न हों कभी भी अंधियारी,
जीवन बीमा से मिलती है पूरी तैयारी।
घर का ख़र्च हो, या हो कोई बड़ी रकम,
हर मुश्किल में ये देता है कभी न ख़त्म होने वाला दम।

अकेले नहीं होते वो, जो पीछे छूट जाते हैं,
जीवन बीमा से, वो हर मुश्किल से लड़ जाते हैं।
एलआईसी का है ये अटूट विश्वास,
हर परिवार की सुरक्षा, यही है ख़ास।

दशकों का अनुभव, और लाखों का भरोसा,
आपके भविष्य का ये है सच्चा ठौर-ठिकाना।
तो आइए, इस सुरक्षा कवच को अपनाएं,
अपने परिवार को चिंताओं से मुक्त कराएं।

जीवन का हर पल फिर हो जाएगा सुहाना,
जब भविष्य की चिंता से मुक्त हो जाए मन का हर कोना।
सुरक्षित भविष्य की ओर एक कदम बढ़ाएं,
जीवन बीमा को अपनाकर, खुशियों को गले लगाएं।

रोहित अग्रवाल
शाखा प्रबंधक, सागर 1
जबलपुर मंडल, मध्य क्षेत्र

"शहर बदला है, लेकिन रफ्तार नहीं..."

7 जून, 2024 – जब मैं दिल्ली आया, तो मन में एक उम्मीद पल रही थी। सोचा था, शायद अब ज़िंदगी थोड़ा ठहरेगी, कुछ साँसे ठिठकेंगी, कुछ पल अपने लिए होंगे।

मुंबई की उन चार सालों की हड़बड़ाहट पीछे छूट गई थी।

जहाँ सुबहें लोकल ट्रेन के हॉर्न से शुरू होती थीं और रातें थकी हुई आंखों में अधूरे ख्वाब लिए गुज़र जाती थीं।

लेकिन जब दिल्ली की सरज़मीं पर कदम रखा,
तो पाया – सिर्फ़ शहर बदला था, रफ्तार वही थी, भागमभाग वही थी,
चेहरे नए थे, पर उनपर वही थकान, वही जल्दबाज़ी की लकीरें थीं।

यहाँ भी हर सुबह मेट्रो पकड़ने की एक दौड़ थी –
ऐसी दौड़, जहाँ जीत का कोई इनाम नहीं,
बस एक और दिन को 'समाप्त' करने की तसल्ली।

हर कोई किसी मंज़िल की ओर भाग रहा है –
पर क्या वाक़ई उसे पता है कि उसकी मंज़िल क्या है?

अगर किसी दिन मेट्रो छूट जाए,
तो जैसे दिन भर कुछ अधूरा सा लगता है –
जैसे दिन ने अपना संतुलन खो दिया हो।

ये दृश्य नया नहीं था –
मुंबई की लोकल अब दिल्ली की मेट्रो बन गई थी,
स्टेशन बदले थे, रूट बदले थे, पर आत्मा अब भी उसी पुराने स्टेशन पर खड़ी थी –

जहाँ वो कभी किसी ख्वाब के इंतज़ार में रुकी थी।

कभी-कभी लगता है – हम सब अनजाने ही किसी अनदेखे ट्रैक पर दौड़ रहे हैं।

हर सुबह उठना, एक तयशुदा रूट पर चल पड़ना,
शाम को फिर उसी यार्ड में लौट आना, जहाँ कल रुके थे।
जैसे जिंदगी एक चक्रीय भ्रम बन गई हो,
न कोई नया स्टेशन, न कोई नई मंज़िल,
बस एक सफर जो थमता ही नहीं।

दिन बदलते हैं, मौसम भी...
पर भीतर कुछ वैसा ही ठहरा रहता है।

और तब दिल में एक सवाल दस्तक देता है –

"क्या मैं सच में कहीं पहुँच रहा हूँ – या बस आगे बढ़ रहा हूँ?"

ट्रेनें समय पर चल रही हैं, शरीर ऑफिस जा रहा है, पर आत्मा...?
वो कहीं पीछे छूट गई है, शायद किसी शाम,
किसी पुराने ख्वाब के कोने में,
किसी अधूरे अरमान की किताब के पन्ने में।

क्योंकि बिना उद्देश्य के सफर, सिर्फ़ थकावट देते हैं – तृप्ति नहीं।

ज़िंदगी की सबसे गहरी भूख – अर्थ की होती है।
एक ऐसा मक़सद जो सुबह उठने की वजह बने,
जो हर दिन को सिर्फ़ जीने नहीं, महसूस करने लायक बनाए।

अगर हर सुबह खुद से कह सकें –
"आज मैंने अपने जीवन के अर्थ को थोड़ा और छुआ है,"
तो यकीन मानिए, आप ज़िंदा हैं,
वरना तो हम बस सांस ले रहे हैं, पर जी नहीं रहे।
और ये भी सच है कि –
उम्र कोई बाधा नहीं है, हालात कोई बहाना नहीं है।
शहर बदल सकते हैं, किरदार बदल सकते हैं,
लेकिन आत्मा की तलाश – वही रहती है।

उसे दिशा चाहिए। उद्देश्य चाहिए। अपनापन चाहिए।

इसलिए, अगली बार जब आप लोकल या मेट्रो ट्रेन के लिए दौड़ें –
एक क्षण को रुकिए।
भीड़ से हटकर अपने भीतर झाँकिए। और खुद से पूछिए –
"क्या मैं वाकई अपने जीवन की उस मंज़िल की ओर जा रहा हूँ, जिससे मेरा मन जुड़ा है? जिसकी ओर मेरी आत्मा मुस्कुराती है?"

अगर उत्तर 'हाँ' हो – तो दौड़िए, पूरे उत्साह और समर्पण के साथ।
लेकिन अगर उत्तर 'नहीं' हो – तो डरिए मत। रुक जाइए।
अपनी आत्मा से दोबारा जुड़िए।
दिशा बदलने का साहस कीजिए।

क्योंकि –

हर सफर की सबसे बड़ी सुंदरता मंज़िल में नहीं,
उस एहसास में है, जहाँ मन को सुकून और आत्मा को अर्थ मिले।

विश्राम
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा),
मंडल कार्यालय, दिल्ली-II

भारतीय जीवन बीमा निगम

जीवन की हर घड़ी में मैं तुझे याद आता रहूँ,
ऐसे में तुझे क्या दूँ कि मरकर भी मैं तेरे साथ रहूँ।

उपहार ऐसा हो कि मेरे रहने पर भी तुझे खुशी दे,
पर मेरे न रहने पर वही उपहार तुझे नई जिंदगी दे।

ये मेरे दिल की ख्वाहिश है मेरे जीवन साथी के लिये,
अपना घर जिसने छोडा मेरे साथ जिंदगी जीने के लिये।

सुख हो या दुख, जीवन के हर पहर में मेरा साथ दिया,
गम रहे या खुशी, मुझसे हमेशा प्यार किया।

अब तक मेरे और मेरे परिवार के लिये उसने बहुत त्याग किये,
अब मैं भी करना चाहता हूँ, कुछ उसके भविष्य के लिये।

जब अपने मित्र को अपना ये विचार मैंने बताया, मुझे तुरंत ही उसने
भारतीय जीवन बीमा पालिसी लेने का सुझाव दिया।

उसने कहा कि बीमा की पालिसी में केवल मेरा हित ही नहीं है,
अपितु मेरे पत्नी और परिवार का हित भी निहित है।

फिर विलंब किये बिना मैंने उसकी सलाह को अपनाया
और अपना तथा अपनी पत्नी का जीवन बीमा करवाया।

यूँ तो बीमा व्यापार में कई निजी कंपनियों ने प्रवेश किया,
पर भारतीय जीवन बीमा निगम में कुछ अलग ही नजर आया।

झूठे वादे कर पालिसी देना, दावा आने पर अस्वीकार करना
ये कुछ कंपनीयों के लिये आम बात है,
पर सच्चाई के साथ नियमों को बताना, जरुरत पड़ने पर हमेशा
ग्राहक की जरुरत पूर्ण करना, ये निगम में कुछ खास है।

करोना महामारी हो या युध्द का मैदान, हमेशा साथ दिया अपने
ग्राहकों का, करके मृत्यु दावों का समय पर भुगतान।

ये तो मैं ही नहीं, भारत की जनता भी जानती है,
लेकिन फिर भी मैं ये बात हमेशा दोहराना चाहूंगा,
कि जब भी मानव जीवन के बीमे की हो बात,
भारतीय जीवन बीमा में ही है हमारा विश्वास,
सत्य और भ्रष्टाचार रहित सेवा को चाहते हो पाना,
तो भारतीय जीवन बीमा में बीमा कराना मत भूल जाना।

"वैसे भी जो परिवार से करते हैं सच्चा प्यार
वो नही करते हैं बीमा लेने से इन्कार,
क्योंकि आप के जीवन का बीमा है
आप के साथ भी आपके बाद भी"।

के. कृष्णवेणी
सहायक, शाखा कार्यालय 69ई,
गाजुवाका, विशाखापट्नम

राजभाषा पुरस्कार वर्ष 2024

हिंदी दिवस -2024

श्री सिध्दार्थ महान्ति,
सी.ई.ओ. एवं प्रबंध निदेशक

दीप प्रज्वलन

दीप प्रज्वलन

मंचासीन माननीय गण

सद्भावना पत्रिका 2024 का विमोचन

समझनी है जिंदगी तो पीछे देखो, जीनी है जिंदगी तो आगे देखो।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 14.01.2025 को शाखा कार्यालय-भुज का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 14.01.2025 को शाखा कार्यालय-गांधीधाम का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा उदयपुर मंडल की शाखा उदयपुर -2 का दिनांक 03.03.2025 को राजभाषा निरीक्षण किया गया । इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा जयपुर -2 मंडल की शाखा सवाईमाधोपुर का दिनांक 05.03.2025 को राजभाषा निरीक्षण किया गया । इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा गुवाहाटी मंडल कार्यालय का दिनांक 22.04.2025 को राजभाषा निरीक्षण किया गया । इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा गुवाहटी मंडल की शाखा शिलांग का दिनांक 24.04.2025 को राजभाषा निरीक्षण किया गया । इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा मण्डल कार्यालय-मैसूर का दिनांक 30.05.2025 को राजभाषा निरीक्षण किया गया ।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा मण्डल कार्यालय बैंगुलुरु-2 का दिनांक 30.05.2025 को राजभाषा निरीक्षण किया गया । इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा मण्डल कार्यालय देहारादून का दिनांक 16.06.2025 को राजभाषा निरीक्षण किया गया ।
इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा शाखा कार्यालय-हरिद्वार-1 का दिनांक 16.06.2025 को राजभाषा निरीक्षण किया गया । इस अवसर पर उपस्थित माननीय सांसद तथा निगम के वरिष्ठ अधिकारीगण।

इंश्योरेंस भी,
सेविंग्स भी
सपने
लक्ष्य
ज़िम्मेदारियाँ
सुरक्षा
आश्वासन
आराम
आत्मनिर्भरता
सुरक्षा
मेरा नियमित प्रीमियम प्लान!
मेरा सिंगल प्रीमियम प्लान!
प्रस्तुत है LIC's
नव जीवन श्री
यूआईएन: 512N387V01
प्लान नं.: 912
नियमित प्रीमियम पेमेंट प्लान
प्रस्तुत है LIC's
नव जीवन श्री
सिंगल प्रीमियम
यूआईएन: 512N390V01 • प्लान नं.: 911
लक्ष्य प्राप्ति के लिए
एकल समाधान
• देय गारंटीड ॲडिशन्स – सारणीबद्ध वार्षिक प्रीमियम (करों के बिना) के प्रतिशत के रूप में.
• सीमित प्रीमियम भुगतान अवधि.
• 6/8/10/12 वर्ष की आकर्षक प्रीमियम भुगतान अवधियाँ.
• पॉलिसी अवधि विकल्प: 10 से 20 वर्ष.
मौजूदा पॉलिसीधारकों के लिए आकर्षक फायदे
सिर्फ एक बार
प्रीमियम भरें और पाएँ
• ₹1000/– की मूल बीमा राशि पर @ ₹85/– का गारंटीड ॲडिशन्स.
• परिपक्वता/मृत्यु पर सेटलमेंट का विकल्प.
• मौजूदा पॉलिसीधारकों के लिए आकर्षक छूट.
• पॉलिसी अवधि के दौरान ऋण की सुविधा.
LIC / R1 / 2025-26 / 11 / Hin
प्लान ऑनलाइन भी उपलब्ध हैं
(एक नॉन–पार, नॉन–लिंक्ड़, जीवन, व्यक्तिगत, बचत योजना)
यह अलग–अलग विशेषताओं के साथ दो भिन्न उत्पाद हैं.
LIC मोबाइल ऐप डाउनलोड करें LIC digital
विज़िट करें: licindia.in
कॉल सेन्टर सर्विस (022) 6827 6827
हमारा वॉट्सएप नं. 8976862090
कहिए 'Hi'
अधिक जानकारी के लिए, अपने बीमा एजेन्ट/अपनी निकटतम एलआईसी शाखा से संपर्क करें/www.licindia.in पर जाएं
हमें यहाँ फ़ॉलो करें: LIC India Forever | IRDAI Regn No.: 512
धोखेधड़ी वाले फ़ोन कॉल्स तथा झूठे/भ्रामक प्रस्तावों से सावधान रहें. आईआरडीएआई या इनके कर्मचारी बीमा व्यवसाय जैसे कि बीमा पॉलिसियों की बिक्री, बोनस की घोषणा या प्रीमियम्स के निवेश, राशियां लौटाना जैसी कोई भी गतिविधियों में शामिल नहीं होते हैं. जिन पॉलिसीधारकों या संभावित ग्राहकों को ऐसे फ़ोन कॉल्स मिलें, वे कृपया पुलिस में इसकी शिकायत दर्ज करें. जोखिम कारकों, नियमों व शर्तों की अधिक जानकारी के लिए, कृपया बिक्री के समापन से पहले बिक्री पुस्तिका को ध्यान से पढ़ लें.
LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA
हर पल आपके साथ